ओ३म्

आर्य सेवक

आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ का मुख पृष्ठ

मई - जून २०१३

आर्य समाज सदर नागपुर में होली मिलन (समाचार पृष्ठ 23 पर देखें)

जबलपुर नगर में आर्य समाज स्थापना दिवस के आयोजन के अवसर पर लिया गया चित्र

(समाचार पृष्ठ 22 पर देखें)

सभा कार्यालय : दयानन्द भवन, मंगलवारी, सदर बाजार, नागपुर (महाराष्ट्र)

गुरुमंत्र व्याख्या

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयांत् ॥ यजु. ३६ ।३॥

अर्थ-(ओ३म्) यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सवोत्तम नाम है क्योंकि इसमें जो अ,उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक (ओ३म्) समुदाय हुआ है । इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं, जैसे- अकार से विराट्, अग्नि और विश्वादि । उकार से हिरण्यगर्भ, वायु और तैजसादि । मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है । उसका ऐसा ही वेदादि सत्यशास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया है कि प्रकरणानुकूल ये नाम परमेश्वर ही के हैं । (प्रथम समुल्लास)

अब तीन महाव्याहृतियों के अर्थ संक्षेप से लिखते हैं :- 'भूरिति वै प्राणः' 'यः प्राणयति चराऽचरं जगत् स भूः स्वयम्भूरीश्वरः' जो सब जगत् के जीवन का आधार, प्राण से भी प्रिय और स्वयम्भू है उस प्राण का वाचक होके 'भूः'परमेश्वर का नाम है । 'भुवरित्यपानः' 'यः सर्वं दुःखमपानयति सोऽपानः' जो सब दुःखों से रहित, जिसके संग से जीव सब दुखों से छूट जाते हैं इसलिये उस परमेश्वर का नाम 'भुवः' है । 'स्वरिति व्यानः"यो विविध जगद् व्यानयति व्याप्नोति स व्यानः जो नानाविध जगत् में व्यापक होके सब का धारण करता है इसलिये उस परमेश्वर का नाम 'स्वः' है । ये तीनों वचन तैत्तिरीय आरण्यक के हैं ।

(सवितुः) 'यः सुनोत्युत्पादयति सर्वं जगत् स सविता तस्य' जो सब जगत् का उत्पादक और सब ऐश्वर्य का दाता है (देवस्य)'यो दीव्यति दीव्यते वा स देवः' जो सर्वसुखों का देनेहारा और जिसकी प्राप्ति की कामना सब करते हैं उस परमात्मा का जो (वरेण्यम्) 'वर्त्तु-मर्हम्' स्वीकार करने योग्य अतिश्रेष्ठ (भर्गः) 'शुद्धस्वरूपम्' शुद्धस्वरूप और पवित्र करने वाला चेतन ब्रह्मस्वरूप है (तत्) उसी परमात्मा के स्वरूप को हम लोग (धीमहि) 'धरेमहि' धारण करें । किस प्रयोजन के लिये कि (यः) 'जगदीश्वरः' जो सविता देव परमात्मा (नः) 'अस्माकम्' हमारी (धियः) 'बुद्धी' बुद्धियों को (प्रचोदयात्) 'प्रेरयेत्' प्रेरणा करे अर्थात् बुरे कामों से छुड़ा कर अच्छे कामों में प्रवृत्त करे ।

'हे परमेश्वर ! हे सच्चिदानन्दस्वरूप ! हे नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभाव ! हे अज निरजन निर्विकार ! हे सर्वान्तर्यामिन् ! हे सर्वाधार जगत्पते सकलजगदुत्पादक ! हे अनादे विश्वम्भर सर्वव्यापिन् ! हे करूणामृतवारिधे ! सवितुर्देवस्य तव यदों भूर्भुवः स्वर्वरेणयं भर्गोऽस्ति तद्वयं धीमहि दधीमहि धरेमहि ध्यायेम वा कस्मै प्रयोजनायेत्यत्राह । हे भगवन् ! यः सविता देवः परमेश्वर भवन्नस्मांक धियः प्रचोदयात् स एवास्माकं पूज्य उपासनीय इष्टदेवो भवतु नातोऽन्यं भवत्तुल्यं भवतोऽधिकं च कश्चित् कदाचिन्मन्यामहे ।'

हे मनुष्यो ! जो सब समर्थों में समर्थ सच्चिदानन्दान्तस्वरूप. नित्य शुद्ध, नित्य बुद्ध, नित्य मुक्तस्वभाव वाला, कृपासागर, ठीक-ठीक न्याय का करनेहारा, जन्ममरणादि क्लेशरहित, आकाररहित, सब के घट-घट का जानने वाला, सब का धर्त्ता, पिता, उत्पादक, अन्नादि से विश्व का पोषण करनेहारा, सकल ऐश्वर्ययुक्त जगत् का निर्माता, शुद्धस्वरूप और जो प्राप्ति की कामना करने योग्य है उस परमात्मा का जो शुद्ध चेतनस्वरूप है उसी को हम धारण करें । इस प्रयोजन के लिये कि वह परमेश्वर हमारे आत्मा और बुद्धियों का अन्तर्यामीस्वरूप हमको दुष्टाचार अधर्म्मयुक्त मार्ग से हटा के श्रेष्ठाचार सत्य मार्ग में चलावे, उसको छोड़कर दूसरे किसी वस्तु का ध्यान हम लोग नहीं करें । क्योंकि न कोई उसके तुल्य और न अधिक है वही हमारा पिता राजा न्यायाधीश और सब सुखों का देनेहारा है ।

(तृतीय समुल्लास) सत्यार्थ प्रकाश से

ओ३म्

आर्य सेवक

आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ का मुखपत्र

वर्ष - ११३ अंक ४-५
सृष्टि संवत १९६०८५३११४
दयानन्दाब्द - १८९
संवत - २०७०
सन - २०१३, मई - जून २०१३

प्रधान
पं. सत्यवीर शास्त्री, अमरावती
मो. नं. ०९४२५१५५८३६

मंत्री एवं प्रबंधक सम्पादक
प्रा. अनिल शर्मा, नागपुर
मो. ०९३७३१२११६४

सम्पादक एवं उपप्रधान
जयसिंह गायकवाड़, जबलपुर
मो. ०९४२४६८५०९१

सह सम्पादक
पं. सुरेन्द्रपाल आर्य, नागपुर
मो. : ०९९७००८००७४

सह संपादक एवं कार्यालय मंत्री
अशोक यादव, नागपुर
मो. : ९३७३१२११६३

कार्यालय पता :
दयानन्द भवन, मंगलवारी, सदर बाजार,
नागपुर-४४०००१ महाराष्ट्र
दूरभाष क. ०७१२-२५९५५५६

अनुकमणिका

क्र.	लेख	लेखक	पृष्ट क्र.
१.	गुरूमंत्र व्याख्या	महर्षि दयानन्द सरस्वती	२
२.	सम्पादकीय		४
३.	आज की समस्या	डॉ. सोमदेव शास्त्री	६
४.	पुरूष सूक्त	पं. सत्यवीर शास्त्री	८
५.	अग्निहोत्र का	डॉ. धर्मेन्द्र कुमार	१३
६.	पुनर्जन्म से जीव	महात्मा चैतन्य मुनि	१४
७.	काव्य सलिला - (१) सच तो.....	पं. सुरेन्द्रपाल आर्य	१७
	(२) जीवन.....	ओमप्रकाश बजाज	१७
८.	आप पीठ दर्द से	अनिल अग्रवाल	१८
९.	आर्य जगत के समाचार		२०
१०.	सभा क्षेत्र के समाचार व सूचनाएं		२२

हमारी धार्मिकता

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' में धर्म के सम्बन्ध में लिखा है – "जो पक्षपातरहित, न्यायाचरण, सत्यभाषण आदि युक्त ईश्वराज्ञा वेदों से अविरूद्ध है, उसको धर्म और जो पक्षपातसहित अन्यायाचरण, मिथ्याभाषणादि ईश्वराज्ञा भंग वेदविरूद्ध है, उसको अधर्म मानता हूँ ।" इसी मान्यता के प्रकाश में कुछ विचार प्रस्तुत हैं । महर्षि की मान्यता के अनुसार धर्म सदाचरण की ओर ले जाता है । शास्त्रों में धर्म के 10 लक्षण बताये गये हैं । उन लक्षणों में भी आचरण की ओर ही इशारा किया गया है । महर्षि ने अर्थ के सम्बन्ध में कहा है कि – "अर्थ वह है जो धर्म से ही प्राप्त किया जावे ।" आार्य समाज मानवमात्र का धर्म एक ही मानता है । धर्म संसार के सभी मानवों के लिये एक ही है । यह भाषा, जाति, लिंग और भौगोलिक सीमा में बँधा हुआ नही है । धर्म एक था, एक है और एक ही रहेगा । यह स्पष्ट है कि धर्म आचरणपरक है । धर्म के जो लक्षण बताये गये हैं, उनसे युक्त जीवन ही धार्मिक जीवन है । तात्पर्य यह है कि वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय या सार्वभौमिक क्षेत्रों में कर्त्तव्य का पालन करना ही धर्म है ।

धर्म किन्ही कर्मकाण्डों अर्थात् मन्दिरों में जाकर शंख, घंटा बजाना, व्रत उपवास करना, तिलक कन्ठी आदि धारण करना, माला जपना, तीर्थाटन करना, मजारों पर चारा चढ़ाना, देवी देवता की सवारी आना, ताजिये उठाना, अली की सवारी आना, मुहूर्त, राशिफल, फलित ज्योतिष, जादू टोना आदि का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है । इसी प्रकार चमत्कार गुरूड़म आदि का भी धर्म से सम्बन्ध नहीं है । इस प्रकार के उत्कृष्ट विचारों का प्रतिपादन करते हुये महर्षि ने अपने धर्मप्रचार का कार्यक्रम प्रस्तुत किया । इस कार्यक्रम को संचालित करने के लिये आर्य समाज की स्थापना की । आर्य समाज कोई नया धर्म, सम्प्रदाय नहीं है अपितु संसार का उपकार करने के लिये एक आन्दोलन है । आर्य समाज के नियम बनाते समय महर्षि ने उसे संसार का उपकार करने वाली संस्था बताया । इससे परिलक्षित होता है कि उनका दृष्टिकोण बहुत व्यापक था ।

महर्षि ने एक नियम में यह कहा है कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है । वेद का पढ़ना – पढ़ाना और सुनना – सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ।" महर्षि ने एक अन्य नियम में कहा "सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतन्त्र रहें ।"

शास्त्रों में धर्म के चार पद– शिक्षा, रक्षा, पोषण और श्रम बताये गये हैं । इसी प्रकार धर्म के तीन स्कन्ध बताये गये हैं अर्थात यज्ञ अध्ययन और दान । धर्म में प्रार्थनाओं का विशेष महत्व है । उदाहरणार्थ – "असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृत गमय ।" वेदों में अनेक मन्त्रों के द्वारा प्रार्थनायें की गई हैं साथ ही इस प्रकार के भी मन्त्र मिलते हैं जिनमें सब प्राणियों में मित्रभाव, सब में समत्व और समष्टि का भाव पारस्परिक सौमनस्य का भाव आदि परिलक्षित होता है ।

कहने का तात्पर्य यह है कि हमें विचार करना होगा कि हम किस स्तर का धार्मिक जीवन जी रहे हैं । धार्मिक जीवन का अन्तिम उद्येश्य मोक्ष की प्राप्ति है । हमारे प्रत्येक क्रियाकलाप उस दिशा की ओर ले जाने वाले हों तो ठीक है अन्यथा इस जीवन का कोई महत्व नही रह जाता है । हमारी धार्मिकता दूसरों के लिये उदाहरणीय एवं अनुकरणीय हो ।

आइये अन्तरावलोकन करें और "मृत्योर्मामृतम्गमय" का पूरी शक्ति के साथ गान करें ।

जयसिंह गायकवाड़

छपते - छपते ....

आर्यसमाज की बलिवेदी पर श्री उदयवीर शास्त्री, संदीप कुमार एवं प्रोमिलादेवी शहीद हुये

पाठकों को स्मरण होगा कि कबीरपन्थी रामपाल दास हरियाणा में महर्षि दयानन्द के प्रति विषवमन करते हुये धार्मिक वातावरण को दूषित कर रहा है । साथ ही अनेकों प्रकार से अपराधिक कार्य कर रहा है । इसका विरोध आर्यसमाज शान्तिपूर्ण ढंग से करता आ रहा है । रामपालदास के ऊपर धारा 306, 302, 120, 140, 420 आदि अनेक अपराधिक केस दर्ज हैं ।

दि.12 मई 2013 को आर्यसमाज ने करौंथा में शान्तिपूर्ण ढंग से प्रातःकालीन यज्ञ के उपरान्त अपना आन्दोलन आचार्य बलदेव जी के नेतृत्व में प्रारंभ किया । इस शान्तिपूर्ण आन्दोलन के चलते पुलिस ने लाठीचार्ज किया । इससे भीड़ नियन्त्रित न हो सकी तो पुलिस ने फायरिंग की । इसमें गुरूकुल लाठौत के उदयवीर शास्त्री, ग्राम शाहपुर के संदीप कुमार एवं ग्राम करौथा की प्रोमिलादेवी की गोली लगने से शहादत हुई तथा 100से अधिक व्यक्ति घायल हुये ।

हरियाणा राज्य के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र हुड्डा ने मजिस्ट्रेट जाँच के आदेश दिये । कानून व्यवस्था की समस्या को देखते हुये प्रशासन ने सतलोक आश्रम करौंथा के सभी भक्तों को बाहर निकालकर ताला लगवा दिया । मांगें माने जाने पर आन्दोलन स्थगित किया गया ।

आर्य नेताओं ने घोषणा की है कि रामपालदास जब तक आर्यसमाज की आलोचना और ऋषि दयानन्द को गालियाँ देना बन्द नहीं करेगा, तब तक उसके विरूद्ध संघर्ष जारी रहेगा ।

(आर्य सन्देश के आधार पर)

विस्तृत समाचार एवं 'सभा' का ज्ञापन अगले अंक में देखें ।

.....***.....

कृपया एक नजर इस पर भी डालें -

आस्ट्रेलिया में कार्डिनल ने पादरियों के बाल यौन उत्पीड़न की निंदा की

कैनबरा । आस्ट्रेलिया में गिरजाघर के कार्डिनल ने पादरियों द्वारा बच्चों के साथ किये जाने वाले यौन उत्पीड़न को छुपाने के लिए लोगों के चुप रहने की आदत की निंदा की है । वेटिकन सुधार मामलों पर पोप फ्रांसिस के सलाहकार आस्ट्रेलियाई कार्डिनल जार्ज पेल ने संसदीय सुनवाई के दौरान पीड़ित बच्चों की ओर गिरजाघर का ध्यान आकर्षित कर दोबारा क्षमा याचना जारी करते हुए कहा, मैं पादरियों की ऐसी हरकतों से बहुत शर्मिंदा हूँ । सत्तर और अस्सी के दशक में भी पादरियों द्वारा बच्चों के यौनशोषण का मामला अपने चरम पर था, लेकिन गिरजाघर की कार्यप्रणाली में आए बदलाव के बाद इसमें गिरावट आई है । मेलबोर्न में पेल से पहले के आर्कबिशप फ्रैंक लिटिल बच्चों के यौन शोषण संबंधी शिकायतों को अत्यंत गोपनीय तरीके से सुनते थे और उसका कोई सबूत भी नहीं रखते थे । वर्ष 2008 में लिटिल की मृत्यु के बाद पेल ने जाना कि फ्रैंक लिटिल गोपनीय सुनवाई के बहाने इन मामलों को छुपाते और इनके सबूत मिटाते थे । आस्ट्रेलिया की प्रधानमंत्री जुलिया गिलार्ड ने बाल यौन शोषण मामलों से गिरजाघरों और सरकारी अधिकारियों के निपटने के तरीकों की जांच के लिए एक रायल कमीशन का गठन किया है । गौरतलब है कि चालीस बच्चों का यौन शोषण और दुष्कर्म करने वाले पादरी जेराल्ड रिड्सडेल को उन्नीस वर्ष की सजा सुनाई गई थी ।

दैनिक भास्कर से साभार

आज की समस्या और समाधन

डॉ. सोमदेव शास्त्री

आज भ्रष्टाचार-दुराचार और आर्थिक घोटाले, विदेशी बैंको (स्विस बैंक) में जमा काले धन का भस्मासुर इतना अधिक फैल गया है कि जिससे भारत की अस्मिता को खतरा पैदा हो गया है । इन सब विनाशकारी कारणों से किस प्रकार देश को बचाया जा सकता, इसके विषय में कुछ चिन्तनशील राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत व्यक्ति अपने-अपने सुझाव लेखनी और वाणी से दे रहे हैं जिनसे समाचार पत्रों और दूरदर्शन के द्वारा भारतीय जनता को अवगत कराया जा रहा है । किन्तु प्राचीन शास्त्रों की इस विषय में मान्यता है कि-

धर्म एवं हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः ।
तस्माद् धर्मो न हन्तव्यो मां नो धर्मो हतो व वधीत ।।

अर्थात् मरा हुआ धर्म मनुष्य को मार डालता है और रक्षित धर्म मनुष्य की रक्षा करता है, इसलिये धर्म को नष्ट (समाप्त) नहीं करना चाहियें क्योंकि कहीं नष्ट किया हुआ घर्म मनुष्य को ही नष्ट न कर डाले । इसलिये मनुष्य धर्म की रक्षा करते थे, बड़ी श्रद्धा से धर्म का पालन करते थे । यदि किसी को 'अधर्मी' कोई कह देता तो वह उसे अपमान या 'गाली' समझता था ।

धर्म कोई पूजा-पाठ करने को नहीं कहा गया, तथा धर्म का कोई चिन्ह जैसे तिलक लगाना, दाढ़ी या चोटी रखना आदि नहीं होता है । धर्म आचरण या व्यवहार को कहा गया है । इस विषय में महर्षि मनु ने लिखा है कि जो व्यवहार आप अपने लिये दूसरों से चाहते हो वैसा व्यवहार दूसरों के साथ करने को धर्म कहते हैं (स्वस्य च प्रियमात्मनः), इसी विषय में महर्षि वेद व्यास ने लिखा है कि जो व्यवहार आप दूसरों से अपने लिये नहीं चाहते हो वैसा व्यवहार तथा आचरण आपकी दूसरों के साथ भी नहीं करना चाहिये, इसी को धर्म कहते हैं ।

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चैवाव धार्यताम् ।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां च समाचरेत ।। (महाभारत)

अर्थात् यदि कोई नहीं चाहता है कि उसके सामान को उससे बिना पूछे कोई न ले तो उसको भी चाहिये कि किसी की वस्तु चाहे वह कितनी ही कीमती हो उस को वह भी न उठाये अर्थात् चोरी न करने को धर्म कहते है । यह धर्म (चोरी न करना) हमारे जीवन के व्यवहार में था अतः कोई किसी के यहां चोरी नहीं करता था क्योंकि वह स्वयं भी नहीं चाहता था कि उसके यहां कोई चोरी करे इसलिये जब तक धर्म के इस यथार्थ स्वरूप का पालन होता रहा तब तक इस देश में कोई चोर नहीं था, और हमारे घरों के दरवाजों पर ताले नहीं लगते थे । इस देश का राजा घोषणा किया करता था कि मेरे देश में कोई भी व्यक्ति (स्त्री हो या पुरूष हो) दुराचारी नहीं है ।

न में स्तेनो जन पदे न कदर्यो न मद्यपः ।
नानाहिताग्नि र्न स्वैरी-स्वैरिणी कुतः ।। (उपनिषद)

धर्म के इस व्यावहारिक स्वरूप को जब से लोगों ने छोड़ दिया तब से धर्म ने भी मनुष्यों की रक्षा करना छोड़ दिया इसलिये प्राचीन शास्त्रों में ठीक ही लिया है कि 'धर्म एवं हतो हन्ति' मरा हुआ धर्म मनुष्य को मार रहा है । आज मनुष्य को मनुष्य से जितना भय है -उतना भय (डर) एक हिंसक पशु से नहीं है । मनुष्य दूध लेने के लिए दुकान पर या दूध बेचने वाले के पास जाता है तो सोचता कि मैं पैसा देकर दूध ले रहा हूँ तो मुझे शुद्ध दूध (बिना पानी मिला हुआ दूध) मिलना चाहिये किन्तु वही व्यक्ति यदि घी बेच रहा है तो घी में मिलावट करके बेच रहा है । दूध बेचने वाला दूध में पानी मिलाकर बेच रहा है । दोनों एक दूसरे की ठग रहे हैं । आज धर्म के अभाव में मनुष्य एक दूसरे के साथ छल-कपट कर रहे हैं । बड़े से बड़ा अपराध करने में भय नहीं लगता है । इस का परिणाम यह है कि कोई भी पदार्थ शुद्ध नही मिलता है । सभी में मिलावट हो रही है । औषधि जो मनुष्य को बचाने के लिये दी जाती है, आज उसमें भी मिलावट करके धन के लोभी व्यक्तियों को थोड़ा भी डर (भय) नहीं लगता । यहां तक कि विष (जीवन नाशक पदार्थ) में भी लोगों ने मिलावट कर दी, वह भी शुद्ध नहीं रहा ।

व्यक्ति का सम्मान व उसकी पूजा आचरण व्यवहार या चरित्र के कारण होती थी, धन के कारण नहीं । इसलिये देश में राम और कृष्ण की पूजा आचरण, व्यवहार या चरित्र के कारण होती थी, धन के कारण नहीं । इसलिये देश में राम और कृष्ण की पूजा होती है, रावण और कंस की नहीं, भले ही उनके पास कितना भी धन-वैभव और बल रहा हो । आज धर्म का अभाव होने से धन को ही सर्वोपरि मान लिया गया । जिसके पास

जितना धन वह उतना ही बड़ा आदमी माना जाता है । धन बड़प्पन का साधन हो गया है, जिससे आज धन संग्रह करने का प्रयत्न कर रहा है । उसी का परिणाम है कालाधान, हजारों करोंड़ों तथा कथित नेताओं द्वारा किये जाने वाले बड़े-बड़े घोटाले तथा विदेशी बैंकों में अपार राशि के रूप में जमा किया धन जिससे आज देश पर अरबों रूपये का ऋण है । देश में अशिक्षा, अन्न, जल तथा चिकित्सा के अभाव में मरने वालों की संख्या में दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है । जिस देश को सोने की चिड़िया कहा जाता था, वह आज दरिद्र देश हो गया है । भ्रष्टाचार में यह अग्रणी गिना जाने लगा ।

वैदिक परम्परा में धन की प्रमुखता नहीं थी, धन को जीवन यात्रा का साधन माना जाता था । इसको कभी 'लक्ष्य ' या उद्देश्य नहीं माना गया । इसलिये जब भी किसी ने धन का लोभ-लालच किया तो उसे यही जवाब दिया जाता था कि 'न वित्तेन तर्प पीयो मनुष्यः' अर्थात् धन से मनुष्य कभी तृप्त नही हो सकता है । जब विभीषण ने युद्ध के पश्चात वैभव सम्पन्न लंका में कुछ दिन रहने के लिए श्री राम से निवेदन किया, उस समय लंका की भव्यता को देखकर लक्ष्मण का मन विचलित होने लगा था, तब राम ने लक्ष्मण को सम्बोधित करते हुए कहा था-"हे लक्ष्मण ! भले ही यह सोने की लंका है किंतु मेरा मन यहां नही लगता क्योंकि माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी महान (श्रेष्ठ)है," यह थी वैदिक संस्कृति जो स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है :-

अपि स्वर्णमयी लंका न में लक्ष्मण रोचते ।
जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।।

वैदिक संस्कृति में वर्णाश्रम धर्म का बहुत महत्व है । ब्राह्मण, क्षत्रिय,वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण हैं । ब्राह्मण अध्ययन, अध्यापन अनुसन्धानादि ज्ञान विषयक कार्यों में सदा सम्पन्न रहता है, क्षत्रिय-राष्ट्र एवं प्रजा की रक्षा में प्रयत्नशील तथा वैश्य व्यापार कार्य में शारीरिक सहयोग करता है । धन कमाने (प्राप्त करने) का कार्य केवल एक ही वर्ण वैश्य करता है, जो वर्ण शिक्षा कार्य, जो वर्ण रक्षा कार्य में तथा जो वर्ण सेवा कार्य में लगा हुआ था, उन तीनों की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने का कार्य वैश्य करता है । क्योंकि धनार्जन कर रहा है वैश्य, शेष तीनों तो अपने कार्य में लगे हुए हैं, यदि वे भी धन कमाने लग जायेंगे तो शिक्षा या राष्ट्र रक्षा कौन करेगा? अतः वैश्य (व्यापारी) का उत्तर दायित्व है कि वह आर्थिक दृष्टि से ब्राह्मण - क्षत्रिय और शूद्र का सहयोग करे । वैश्य (व्यापारी) का धन तो इन तीनों के लिये है अपने लिये तो बहुत थोड़ा है । अतः धन संचय का तो प्रश्न ही नही उठता है तथा शेष तीन वर्णों के धनार्जन और धन संचय का भी कोई प्रश्न ही नही उठता है । अतः किसी भी वर्ण का कोई भी व्यक्ति धन संग्रह करने की प्रवृत्ति नही रखता था । इसीलिए रामायण में लिखा है कि राम राज्य में चारों वर्ण अपने-अपने कर्म में लगे हुए लोभ लालच से रहित थे :-

ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्याः शूद्र लोभ वर्जितैः ।
स्वकर्म सु प्रवर्तन्ते तुण्टाः स्वैरेव कर्मभि ।।

चार आश्रम है ब्रह्मचर्य -गृहस्थ-वानप्रस्थ और सन्यास इनमें भी तीन आश्रमों (ब्रह्मचर्य-वानप्रस्थ-सन्यास) को धन प्राप्ति और धनसंग्रह के लिये विधान नहीं है । तीनों गृहस्थ पर आश्रित हैं, ब्रह्मचारी पढ़ने में, वानप्रस्थी स्वाध्याय और साधना में सन्यासी उपदेश में व्यस्त रहते हैं । इन तीनों आश्रम वासियों के भोजनादि की व्यवस्था अपने धन से गृहस्थ करता है । गृहस्थियों में भी केवल वैश्य (व्यापारी) ही कर पाता है क्योंकि शेष तीनों वर्णों के पास तो धन है ही नहीं । उनकी भी आर्थिक व्यवस्था का भार वैश्य गृहस्थ पर ही है जो तीनों वर्णों तथा तीनों आश्रम के भोजन वस्त्र- आवासादि की व्यवस्था का कार्य करके सभी वर्णों तथा सभी आश्रमवासियों को अपने-अपने कर्त्तव्य (धर्म) का पालन करने का अवसर प्रदान करके स्वयं भी स्वधर्म (सभी वर्णों और आश्रमों के भरण पोषण) का पालन (कार्य) करता है । गृहस्थ में रहते हुए वह स्वयं भी अनुभव करता है कि मैं इकट्ठा करके क्या करूंगा मुझे भी तो सब कुछ यहीं छोड़ कर जाना है अर्थात वानप्रस्थ आश्रम में जाना है । अतः वह भ्रष्टाचार-मिलावट, धोखेबाजी, काला धन संग्रहादि क्यों करेगा । उसे तो यही पढ़ाया गया है कि "तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः" त्याग की भावना के साथ भोग करो । इतना ही नहीं सन्यास आश्रम में प्रवेश करते समय तो व्यक्ति प्रतिज्ञा करता है कि "धन की इच्छा" का भी त्याग कर रहा हूँ ।

इस प्रकार वर्णाश्रम व्यवस्था के द्वारा ही ये सारी समस्याएं (भ्रष्टाचार, आर्थिक अपराध आदि) दूर की जा सकती हैं । अतः वर्णाश्रम व्यवस्था तथा धर्म के यथार्थ स्वरूप का प्रचार-प्रसार होना अत्यावश्यक है, जिससे मानव जीव सुखी व सुरक्षित रह सके ।

अध्यक्ष - वैदिक मिशन, मुम्बई

पुरूषसूक्त का भौतिक चिन्तन

पं. सत्यवीर शास्त्री

ऋग्वेद दशम मण्डल के नवतिसूक्त को 'पुरूषसूक्त' कहा जाता है । इस सूक्त में कुल सोलह मंत्र हैं । यही मंत्र यजुर्वेद के 31 वे अध्याय में हैं । इन मंत्रो में 'पुरूष' शब्द कर्त्ता के रूप में पाँच बार, 'करण के रूप में एक बार और कर्म के रूप में तीन बार आया है । परमात्मा को पुरूष एवं यज्ञ शब्दों द्वारा प्रतिपादित किया है । मंत्रो का अर्थ और स्पष्टीकरण लिखते समय-शब्दों की उत्पत्ति, व्याकरण और निरूक्त और अभिधा, व्यंजना और लक्षण वृत्तियों के आधार पर लिखी है । संपूर्ण सूक्त का ऋषि ''नारायण'' है । पुरूष देवता तेरह मंत्रो का है । ऋग्वेद के जिन सूक्तो मे सृष्टि विषयक ज्ञान की जानकारी दी है पुरूषसूक्त का सर्वोत्तम स्थान है । पौराणिक पंडित इसी पुरूष सूक्त से भारत के तिरूपति, हरिव्दार,बद्रीनाथ काशी, जगन्नाथपुरी, वैष्णोदेवी, पंढरपुर आदि मंदिरों में षोडषोपचार पूजा करते हैं।

पुरूष 'शब्द जगत् रचयिता ईश्वर का ही वाचक है, इसकी पुष्टि निम्न उध्दरणों से होती है –

वेदाहमेतं.....विद्यतेऽयनाय । यजुर्वेद 31–18 ।

'' क्लेशकर्म विपाकाशयै..... पुरूषविशेषः ईश्वरः'' योगशास्त्र ।

''सत्वरजतमसां....विशंतिर्गण '' सांख्यशास्त्र । '' प्रशाशितारम्.....पुरूषं परम्'' मनु ।

''तस्माव्दा एतस्मादात्मनः....रेतसः पुरूष'' तैतिरोयोपनिषद् । ''अपाणिपादो जवनो..... पुरूष पुराणम्'' – श्वेत ।

''दिव्यो ह्यमूर्त.... परतपरः'' मुण्डकोपनिषद् । '' त्वमादिदेव पुरूषः... परं निधानम्'' गीता ।

''भजिजो आदि पुरूखी अखंडीत'' ज्ञानेश्वरी ।

पुरूष सूक्त में प्रलयोपरान्त सृष्टि की उत्पत्ति कैसे हुई ? इसका वर्णन है । इस विषय में जगत् गुरू वेदों के मर्मज्ञ महर्षि स्वामी दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में लिखते है, ''जब सृष्टि का समय आता है तब परमात्मा उन परम्सूक्ष्म पदार्थो को इकट्ठा करते हैं । उनकी प्रथम अवस्था में जो परम सूक्ष्म प्रकृतिरूप कारण से कुछ स्थूल होता है, उसका नाम महत्तत्व, और उससे कुछ स्थूल होता है उसका नाम अहंकार और अंहकार से भिन्न-भिन्न पाँच सूक्ष्म भूत श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिव्हा, घ्राण, पाँच ज्ञानेद्रियाँ वाक्, हस्त, पाद, उपस्थ और गुदा, ये पाँच कर्मेन्द्रियाँ कुछ स्थूल उत्पन्न होता हुआ दृश्यमान सृष्टि की निर्मिति होती है '' ।

महर्षि स्वामी दयानन्दजी के वेदभाष्य एवं वैदिक विद्वानों के भाष्यों का संदर्भ लेकर पुरूष-सूक्त का भौतिक अर्थ एवं स्पष्टीकरण लिखा गया है ।

1) ईश्वर, जीव, प्रकृति ये तीनों, अनादि और नित्य हैं ।

2) ईश्वरः– नित्य, चेतन, निराकार, अपरिर्तनीय, सृष्टिनिर्मिति निमित्त कारण है ।

3) जीवः– नित्य, चेतन और सृष्टिनिर्मिति में साधारण निमित्तकारण है ।

4) प्रकृतिः– नित्य और सृष्टि-निर्मिति में उपादान कारण है ।

5) निर्माण-नाशः–प्रकृति के सूक्ष्म परमाणुओं के संयोग-वियोग से-पदार्थो का निर्माण और नाश होता है ।

6) त्रिपादः– (तीन प्रकार की अवस्थाएँ) परमाणुओं का संधात बननेपर पदार्थों की तीन प्रकार की अवस्थाएँ होती हैं । वायुरूप । द्रवरूप । घनरूप । जैसे – वायुरूप – प्राणवायु । द्रवरूप – जल । घनरूप – पृथ्वी ।

7) देवपूजाः– उस पदार्थ का यथार्थ स्वरूप जानना – वह द्रवरूप है वायु रूप है घनरूप है ।

8) संगतिकरणः– एक पदार्थ की दूसरे पदार्थ से मिलान की प्रक्रिया होना । यह दो प्रकार की होती है । एक तो नैसर्गिक – जैसे – कोयला – यह दो प्रकार का । लकड़ी के जलने से कोयला बनता है । पेड भूकंप में जमीन में दब जाएँ तो पृथ्वी के गर्मी से पूर्ण रूपेण जलता तो नहीं, लेकिन गर्मी से भारी और काला बनता है । इसे पत्थर कोयला कहते हैं ।

9) दानः– एक दूसरे – पदार्थों के परस्पर मिलने से अनेक पदार्थ बनते हैं ।

पुरूष-सूक्त के मंत्र एवं अर्थ

1) सहस्त्रशीर्षे त्यस्य नारायण ऋषि । पुरूषो देवता । निचृदनुष्टुप् छंदः । गांधार स्वरः

सहस्त्रशीर्षा पुरूषः सहस्त्रपात् ।

स भूमिं सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठदशाङ्गुलम् ।। 1 ।।

अर्थ – दृश्यमान संसार का जो कारणरूप परमपिता परमेश्वर है, उस परमात्मा को पुरूष की उपमा देकर 'पुरूष' माने तो, ईश्वर में हजारों शिरोंकी सोचने की क्षमता, हजारों आँखों का देखने का सामर्थ्य और हजारों पैरों के सम्मान भाररूप शरीर को आधार देने की शक्ति है । (सर्व व्यापक या महतो–महियान होने से, उस जगदीश्वर ने सारी(पृथ्वी) भूमि को चारों ओर से आच्छादित कर लिया । आच्छादित करने पर भी दश अंगुल शेष है ।

स्पष्टीकरण – एक और हजार में अंतर है । परमात्मा की विशाल–शक्ति, दर्शाने एक हजार शब्द का प्रयोग है । वैज्ञानिक युग में, इंजीन, या मशीन की शक्ति दिखाने के लिए–इकाई के लिए 'अश्वशक्ति' (हार्सपावर्स) का प्रयोग करते है । जैसे– पाँच हार्सपॉवर, बीसहार्सपॉवर, पच्चास हार्सपॉवर आदि । ईश्वर बहुत विशाल बहुत विशाल होने से उसने पृथ्वी को ढाँक लिया फिर भी बचा है । दश अंगुल पूर्णता का बोधक है। दश अँगुल शेष का अर्थ पूरा–पूरा शेष है । जैसे''पूर्णात्पूर्णमुदच्यते पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण–मेवावशिष्यते'' ।। इससे लक्षित होता है ।

2) पुरूषेत्यस्य नारायण ऋषिः । ईश्वर देवता । निचृदनुष्टुप् छंदः । गांधार स्वरः ।

पुरूषऽएवेदं सर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृत्वस्येशानो, यदन्नेनातिरोहति ।।2।।

अर्थ – यह विद्यमान ब्रह्माण्ड आदि पुरूष है । इतना ही नहीं तो जो ब्रह्माण्ड बना था, या आगे बनेगा उसका कारण यही आदिपुरूष, यही सारी सृष्टि का स्वामी है, यही बड़ा महान है । परमात्मा मोक्षरूप सुख का कारण है । यही प्राणीमात्र निर्मित का कारण सदैव का बना रहता है ।

स्पष्टीकरण– यह जो वर्तमान में सृष्टि का नजारा दिखाई दे रहा है । यही नजारा प्रलय पूर्व सृष्टि में था । आगे प्रलय के बाद भी जो सृष्टि बनेगी उसमें भी आज के सम्मान – सूर्य – चंन्द्र –तारे आकाश – पशु–पक्षी – नदी–पहाड़ ये सभी होंगे । इस पुरूषरूपी परमात्मा का कभी विनाश नही होता । वह अनादि है ।

3) एतावानित्यस्य नारायण ऋषिः । पुरूषोदेवता । निचृदनुष्टुप् छन्दः ।

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरूषः ।

पादोऽस्य विश्वा भूतानि, त्रिपादस्यामृतं दिवि ।।3।।

अर्थ – दृश्यमान जगत् सूर्य चन्द्र, तारे, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पहाड़ नदियाँ सभी प्राणी वन जंगल अंतरिक्ष में ग्रह, तारे, निहारिकाएँ बनी हैं । उसी पुरूष रूपी परमात्मा के कारण रूप सामर्थ्य का फल है । जो सृष्टि बनकर क्रियाशील है, परमात्मा उससे भी अधिक उससे भी अधिक क्रियाशील है । हम जिस पृथ्वी नामक ग्रह पर रहे हैं, यह तो उसका अंशमात्र है । उसके अधिकांश अंशो में सृष्टि का पूर्ण विकास होना है ।

स्पष्टीकरण– किसी पूर्ण वस्तु को विभाजित कर दिखाना हो तो, चार विभागो में, हम जिस भाग रह रहे हैं, यह विकसित भाग उस विराट पुरूष का एक अंश मात्र है । उसके तीन अंशो में कही प्रलयावस्था, कहीं सृष्टि निर्मिती का प्रारम्भ तो कही ग्रहों का निर्माण हो रहा है । सृष्टि प्रवाह से अनादि है ।

4) त्रिपादित्यस्य नारायण ऋषि । पुरूषो देवताः । अनुष्टुप्छन्दः । गान्धारः स्वरः ।

त्रिपादूर्ध्वं उदैत्पुरूषः पादोऽस्यहाभवत्पुनः ।
ततो विष्वड व्यकामत त्साशनानशनेऽअभि ।।4।।

अर्थ–यह तीन अंशोवाला पुरूष परमात्मा है यह मुक्तात्मा जिस मुक्ति का आनंद लेते है, उस मुक्ति, अवस्था से भी श्रेष्ठतम स्थिति में सदैव रहता है । इसके जिस अंश निर्मिति का कार्य चलता है । वहाँ खानेवाले न खानेवाले की निर्मिति होती है ।

स्पष्टीकरण – सृष्टि के सारे पदार्थो का दो भागों में वर्गीकरण करें तो, खानेवाले और न खानेवाले पदार्थ अर्थात् जिसे हम – चराचर–जड़चेतन कहते है । चेतन अन्न खाते हैं । जड़ पदार्थ जैसे– पहाड़ सूर्य ग्रहादि नहीं खाते ।

5. ततो विराडित्यस्य नारायण ऋषिः । सष्ट्रा देवता । अनुष्टुष् छंदः । गांधारः स्वरः ।

तस्माद् विराडजायत विराजोऽधि पूरूषः ।

स जातोऽऽयरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः ।।5।।

अर्थ– उस तेजस्वी कारणरूपी पुरूष से प्रकृति के सूक्ष्म अणुओं को गति मिलनेपर परमाणु इक्कठा हो गए । उनसे बहुत बड़ा गोलाकार विराट बना । वह विराट कई भागों में विभाजित । विभाजित एक भाग पर भूमि का निर्माण हुआ । भूमि पर बड़े (पूर) नगरों का निर्माण हुआ । मनुष्यों के शरीर बने (पृ. पालनपूरणयोः)

स्पष्टीकरण – 'विराट्' अर्थात् तीव्र उष्णतावाला गोलाकार ब्रह्मांड । उसके अनेक भागों में विभाजित होने पर पृथ्वी, बुध, मंगल, गुरू, शुक्र, शनि जैसे ग्रह बनते है । इनके शीतल हो जानेपर इनका जो स्थान शीतल होता है, उस स्थान को भूमि कहते हैं । आज भी पृथ्वी पर बहुत सारे ज्वालामुखी केन्द्र हैं । पृथ्वी का जो भाग पानी एवं धने जंगलों से व्याप्त है उसे भूमि दर्शाया है ।

इसी मंत्र में सृष्टि निर्मिति का कम है । इसी रहस्य को तैत्तिरोयोपनिषद् में ''तस्माद्वा.....अन्नमयः रसः'' द्वारा, सांख्यसूत्रकार ने ''सत्वरजतमसां.....पञ्चविंशतिर्गणः'' इस सूत्र से स्पष्ट किया है । प्रलय अवस्था में प्रकृति के परमाणुओं को गति मिलनेपर वे एक स्थानपर खींचे गएँ । सूक्ष्म परमाणुओं में हल-चल ही आकाश है । सूक्ष्म परमाणुओं के संघात (गोले) को विराट कहते है । आकाश में वायु की निर्मिति हुई । वायुओं के परस्पर घषर्ण से अग्नि निर्माण हुआ । आक्सीजन वायु के बिना आग की उत्पत्ति नहीं होती । ऑक्सीजन और हाइड्रोजन वायु के मिलनेपर जल की उत्पत्ति होती है । जल सूखने पर ऊपर ऊठे हुए भाग को भूमि कहते हैं । भूमिपर प्राणियों की उत्पत्ति है ।

6) यत्पुरूषेणत्यस्य नारायण ऋषिः। पुरूषो देवता । निचृदनुष्टुप् छंदः । गांधारः स्वरः ।

यत्पुरूषेण हविषा देव यज्ञमतन्वत ।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म ऽ इध्म शरध्दविः ।।6।।

अर्थ– उस परम विराट पुरूष के कारण से अग्नि, वायु, आदित्य, जल, पृथ्वी आदि देवताओं ने सृष्टिरूप-रूप यज्ञ का विस्तार किया तो सहस्त्रों, ग्रहों, तारे और निहारिकाएँ पैदा हुई । इसमें से कई सूर्य के समान अतिउष्ण होने से ग्रीष्म के समान, कई अत्याधिक शीतल होने से शरद् के समान और कुछ नाधिक शीतल नाधिक उष्ण होने से 'वसंत' के समान हैं ।

स्पष्टीकरण– वेद में अग्नि, वायु, आकाश, जल, पृथ्वी-पंचभूतों को देवता कहा है । इनके व्दारा ही सृष्टि निर्मिति का विस्तार होता है । प्रलय के पश्चात् कारण रूपी परमेश्वर से सहस्त्रों ग्रहों, तारे-निहारिकाओं का निर्माण हुआ वे तीन प्रकार की है । कुछ अत्यधिक उष्ण हैं । कुछ अत्यधिक शीत हैं । कुछ सम शीतोष्ण है । उनकी विशेषताओं को ही, ग्रीष्म, शरद् एवं वसन्त नामों से दर्शाया है ।

7) तं यज्ञमित्यस्य नारायण ऋषिः । पुरूषो देवता । निचदनुष्टुप् छंदः । गांधारः स्वरः ।

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरूषं जातमग्रतः ।

तेन देवाऽअयजन्त, साध्याऽऋषयश्च ये ।।7।।

अर्थ– मनुष्य जाति की सबसे प्रथम उत्पत्ति में, जिन्होंने योगाभ्यास आदि साधनों से मोक्ष प्राप्त किया था, और जो मंत्र द्रष्टा ऋषि थे वे पैदा हुए । उन मुक्तात्माओं ने और मंत्र दृष्टा ऋषियों ने योनिज मनुष्य जाति की उत्पत्ति प्रारम्भ की ।

स्पष्टीकरण–भूमि, जंगल, पानी का निर्माण होने पर प्राणियों की अयोनिज उत्पत्ति होती है । मानव भी अयोनिज पैदा होते हैं । प्रारम्भ में अयोनिज रूप में मुक्तात्मा और मंत्र द्रष्टा ऋषि जन्म लेते हैं । ये ही देव योनिज सृष्टि का यज्ञ करते हैं । कार्य और कारण से सृष्टि की उत्पत्ति है । केवल गोबर से बिच्छू पैदा नहीं होते । गोबर में दही डालकर ढँक दिया जाए तो पाँचवे दिन बड़े-बड़े बिच्छु दिखाई देंगे । यह अयोनिज सृष्टि उत्पत्ति का उदाहरण है ।

8) तस्मादित्यस्य नारायण ऋषिः । पुरूषो देवता । विराडनुष्टुप् छन्दः ।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं वृषदाज्यम् ।

पशूँस्ताँश्चके वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये ।।8।।

अर्थ– उस सृष्टिरूप निर्मितियज्ञ के चलते (भूमि) निर्माण होने पर पशु पैदा हुए । धने जंगल और उसमें रहने वाले, सूक्ष्मकिटाणु, ग्राम में रहने वाले प्राणी पैदा हुए । पशुओं से आज्यम पैदा हुआ ।

स्पष्टीकरण– परमात्मा बड़ा दयालु है । प्राणियों के भोजन का प्रबंध

पहले ही कर देता है । बालक के जन्म के पूर्व ही माता वक्षस्थलों में दूध भर देता है । शाकाहारियों के पूर्व भूमि पक्षियों के पूर्व पेड़ एवं उनके भक्ष्य वायु पर निर्भर प्राणियों के पूर्व वायु का निर्माण कर देता है । भक्ष्य पहले बाद में भक्षण करने वाले निर्माण करता है ।

9) तस्मादित्यस्य नारायण ऋषिः । सृष्टेश्वर देवता । निचृदनुष्टुप् छन्दः । गांधार स्वरः ।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दाँ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ।।9।।

अर्थ– मनुष्य प्राणी उभययोनि होने से स्वयं ही जगत् ज्ञानी नहीं बन सकता अतः सृष्टि के प्रारम्भ में ही यज्ञरूप प्रभुने 'तिन के' से लेकर ईश्वर तक के पदार्थो का ज्ञान 'ऋग्वेद'के रूप में, स्तुति और गेय उपासना का ज्ञान सामवेद के रूप में, विभिन्न बिमारियाँ एवं औषधियों का ज्ञान अथर्व वेद के रूपमेः और, श्रेष्ठतम् कर्म करने का ज्ञान यजुर्वेद के रूप में (चारऋषियों के माध्यम से) मानवों को प्रदान किया ।

स्पष्टीकरण– आहार, निन्द्रा, भय, मैथुन चारों कियाएँ मनुष्यों एवं सभी प्राणियों में स्वाभाविक हैं । किन्तु तैरना, आग से बचना, गंध से शत्रु-मित्र की पहचान, नैसर्गिक आपत्तियों का आकलन पशुओं में नैसर्गिक होता है । मनुष्यों में नहीं । जैसे पाँच दिन का गाय का बच्छड़ा नदी से तैरकर निकल जायेगा, मनुष्य का दश वर्षीय बालक को तैरना नहीं सिखाया हो तो डूबकर मर जायेगा । अतः मानवों को सृष्टि और पदार्थ ज्ञान की आवश्यकता होती है ।

10) तस्मादित्यस्य नारायण ऋषि । पुरूषो देवता । निचदनुष्टुप् छन्दः गांधारः स्वरः

तस्मादश्वा अजायन्त, ये के चोभयादतः ।
गावो हजज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जातः अजावयः ।।10।।

अर्थ– उसी सृष्टि निर्मिति कम में अश्वों का निर्माण हुआ । नीचे ऊपर दाँतवाले प्राणी, बिना दाँतवाले सूक्ष्म किटाणु, गौएँ और भेड़-बकरियाँ पैदा हुई ।

स्पष्टीकरण– सृष्टि प्रादुर्भाव में ऐसे प्राणियों के निर्मिति हुई जिनके मुँह में ऊपर नीचे दाँत हैं । केवल ऊपर के दाँतवाले और बिना दाँतवाले प्राणी पैदा हुए । गौंए, अश्व, बकरी और भेड़ों का उल्लेख इसीलिए किया कि, ये प्राणी मानवों के लिए बहुत ही उपकारक या आधार है । ''गौ'' को तो वेदों में साक्षात् माता माना है (माता रूद्राणाम्)

11) यत्पुरूषस्य नारायण ऋषिः । पुरूषो देवता । निचदनुष्टुप् छंदः । गांधारः स्वरः ।

यत्पुरूषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीं त्किबाहू किमुरू पादाऽउच्चते ।।11।।

अर्थ– यह जो विराट रूपी पुरूष है, जिसकी महिमा का एवं कारण रूप का विस्तृत वर्णन पूर्व नौ मंत्री में किया है उस पुरूष को कितनी कल्पनाओं से (उपमाओंसे) समायोजित किया है ? क्या है इसका मुख ? बाहू क्या है ? उरू क्या है ? पैर क्या है ? मुख, बाहू, उरू, तथा पैरो को कौनसी उपमाएँ दी है ?

स्पष्टीकरण– वेद एवं महर्षि स्वामी दयानदजी ने सृष्टि रचयिता परम पुरूष को निराकार माना है । उसका कोई आकार या हाथ पैर वाला शरीर नहीं । इस मंत्र में सृष्टिरूप ईश्वर को मनुष्य पुरूष की उपमा देकर पूच्छा गया कि, इसके मुख, बाहू, जंघाएँ पैर किसके समान है ?

12) ब्राह्मण इत्यस्य नारायण ऋषिः । पुरूषो देवता । निचदनुष्टुप छंदः । गांधारः स्वरः ।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्, बाहू राजन्य कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याँ शूद्रोऽअजायत ।।12।।

अर्थ– इस विराट रूप पुरूष का मुख 'ब्राह्मण' है । बाहूएँ क्षत्रिय है । जघाएँ वैश्य हैं, और पैर शूद्र है, मानव समाज में जो ज्ञानवान कर्म करने वाले है उन को ब्राह्मण कहना चाहिए । देश-धर्म-राष्ट्र व बाहूबल से रक्षा करने वालों को क्षत्रीय कहना चाहिए । खान-पान, आहार-विहार, कृषि, व्यापार का प्रबंधन करने वालों को वैश्य कहना चाहिए । जो ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्यों के समान कोई काम नहीं कर सकते केवल दूसरों की सहायता कर सकते हैं ऐसे सामर्थ्यहीन लोगों को शूद्र कहना चाहिए ।

13) चन्द्रमा इत्यस्य नारायण ऋषिः । पुरूषो देवता । अनुष्टुप छंदः । गांधारः स्वरः ।

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद वायुश्च प्राणश्च, मुखादग्निरजायत ।।13।।

अर्थ– उस सृष्टि निर्माण करने वाले प्रकृतिरूप यज्ञ के मन से चन्द्रलोक की उत्पत्ति, आँखों से सूर्य, श्रोत्र से वायु और प्राण और

मुख से अग्नि की उत्पत्ति हुई ।

स्पष्टीकरण– मन बहुत ही शक्तिशाली है । (मनो हि एवं मनुष्याणां कारणं बंध मोक्षयोः) (तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु) वस्तु निर्माण का विचार ही प्रथम मन में आता है । मन को प्रसन्न रखकर किए जानेवाले कार्य में चन्द्रमा के समान प्रसन्नता होती है । चक्षु और सूर्य, श्रोत्र और वायु–इनका समवाय–समवायी–संबंध है । प्रकाश के बिना आँखें देख नहीं सकतीं । वायु के बिना श्रोत्र सुन नहीं सकते । ध्वनि वायु के माध्यम से ही श्रोत्र से जानी जाती है । वायु शरीर का (आधार) प्राण है । जैसे मनुष्य शरीर में 'मुख' प्रमुख है, वैसे सभी देवताओं में 'अग्नि देवताः' अग्रणी है ।

14) नाभ्या इत्यस्य नारायण ऋषिः । पुरूषो देवता । अनुष्टुप् छन्दः । गांधारः स्वरः ।

नाभ्या ऽ आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पभ्दयां भूमिर्दिशः श्रोयात्तथा लोकाँ२ऽ अकल्पयत् ।।14।।

अर्थ– यह सृष्टि रूपी जो विराट पुरूष है, उसका 'अंतरिक्षवाला रिक्त स्थान नाभी के समान है। द्यु लोक में चमकने वाले तारे निहारिकाएँ उसके शिर के समान हैं । ये दिशाएँ और भूमि उसके पैर के सदृश हैं । अन्य लोक अर्थात्–चन्द्र, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र, आदि लोक उसके श्रोत्र के समान दाएँ एवं बाएँ हैं ।

स्पष्टीकरण– आकाश की ओर देखने पर आँखे जिस स्थान को देख नहीं पातीं उस स्थान को अंतरिक्ष कहते हैं । अंतरिक्ष को प्रकृति रूप पुरूष कह 'नाभि' अर्थात् मध्य केन्द्र स्थान माने तो ऊपरी चमकने वाले–ग्रह तारे ऊपर होने से शिर की उपमा दी है । नीचे भूमि और दिशाएँ होती है । वे पैर के समान हैं दोनों और के ग्रह तारे श्रोत्र की उपमा दी है ।

15) सप्तास्यासनेत्यस्य नारायण ऋषिः । पुरूषो देवता । गांधारः स्वरः ।

सप्तास्यासन परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽ अबध्नन् पुरूषं पशुम् ।।15।।

अर्थ– कारण रूपी परमपिता परमात्मा की प्रेरणा से देवताओं ने जिस सृष्टि निर्मिति यज्ञ का प्रारम्भ किया था, उस को, प्रकृति महत्व, अहंकार, पाँच सूक्ष्मभू, पाँच स्थूल भूत पाँच ज्ञानेन्द्रियां और सत्व रज तम इन इक्कीस साधनों से सात परिधियों में विस्तारित कर पूरा किया ।

स्पष्टीकरण– ईश्वर, जीव, प्रकृति तीनों अनादि हैं । प्रलयावस्था में प्रकृति के कण अतिसूक्ष्म अवस्था में होते हैं । सृष्टि उत्पत्ति के समय कारणरूप पुरूष से गति मिलने पर, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी पंच महाभूतों का निर्माण होता है । पंच महाभूतों से ही, आदित्य, इन्द्र, वरूण, चन्द्रमा, प्रजापति, आदि देवताओं की निर्मिति होती है । संगति करण की प्रक्रिया से सभी चराचर जगत् का निर्माण होता है । प्रकृति, महत्व, अहंकार आस्थाओं के नाम है । भू, भुवः, स्वः, जनः, तपः, सत्यम्, ये पृथ्वीपर एक के ऊपर सात परिधियाँ । आधुनिक सायन्स की परिभाषा में इनके भिन्न–भिन्न नाम हैं।

भौतिक शास्त्रज्ञ भी कहते हैं ''पृथ्वी'' के चारों ओर विशिष्ट सीमा पर वायु के एक के ऊपर एक ऐसे–सात आवरण हैं ।

16) यज्ञेनेत्यस्य नारायण ऋषिः । पुरूषो देवता । विराट् त्रिष्टुप् छंन्दः । धैवतः स्वरः ।

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।।16।।

अर्थ– देवताओं ने देव पूजा, संगतिकरण, दान की प्रकिया व्दारा सृष्टि निर्माण यज्ञ पूरा किया । देवताओं में सृष्टि निर्मिति के गुणधर्म सदैव रहते हैं । प्रलय के निर्माण और निर्माण के बाद पुनः प्रलय यह कम व्यापार चलता है । साधनों से मोक्ष को प्राप्त होने वाले मोक्ष की अवधि तक आनंद में रहते हैं । जब तक मोक्ष प्राप्त नहीं होता तब तक जीव का 'पुनरपिमरणं पुनरपिजनमम का चक्र चलता है ।

महर्षि स्वामी दयानन्दजी ने सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में आकाश को भी नित्य माना है । प्रकृति के सूक्ष्म परमाणुओं में ही परिवर्तन ही सृष्टि निर्मिति है ।सृष्टि निर्मिति के पूरे रहस्य को वैज्ञानिक अभी भी जान न पाएँ हैं । वही परमपिता परमेश्वर रहस्यमय एवं पूजनीय है ।

प्रधान
आ.प्र.सभा.म.प्र.विदर्भ
प्रशान्त नगर, अमरावती

अग्निहोत्र का वैदिक एवं वैज्ञानिक स्वरूप

-डॉ. धर्मेन्द्र कुमार

वैदिक संस्कृति में अग्निहोत्र का स्थान श्रेष्ठतम् माना गया है। समस्त वैदिक एवं लौकिक संस्कृत वाड्मय में 'यज्ञ' की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई है।

जैसे -'प्रसुव यज्ञम्' यजु 30.1. में कहा गया है- सबको यज्ञ की प्रेरणा करो । 'श्रेष्ठतमाय कर्मण आध्यायध्यम्' यजु.1.1। हे मनुष्यों वह सविता देवता तुम्हे अत्यन्त श्रेष्ठ कर्म यज्ञ के लिए प्रेरित करें ।

'यज्ञ' का यौगिक अर्थ है - सत्कार (Honour) संगति (Union, Association) दान (Charity) इस प्रकार है।

राजा जनक ने महर्षि उद्दालक से यज्ञ के बारे में तीन प्रश्न पूछे-यज्ञ की आत्मा क्या है ? उत्तर दिया ऋषि ने 'स्वाहा वै यज्ञस्य आत्मा' अपना सर्वस्व दूसरों के लिए, परोपकार के लिए त्याग कर देना यज्ञ की आत्मा है । दूसरा प्रश्न था - यज्ञ का प्राणतत्व क्या है ? उत्तर- 'इदं न मम वै यज्ञस्य प्राणः' मेरे लिए और मेरा कुछ नहीं- Minimium for self and maximum for others मेरे लिए सबसे कम दूसरों के लिए सब कुछ यह इदं न मम' का भाव है। तीसरा प्रश्न था - यज्ञ का सार क्या है? उत्तर -सुरभिर वै यज्ञस्य सारः' निश्चय से सुगन्धि ही यज्ञ का सार है ।

मध्यकाल में कुछ दिग् भ्रमित लोगों ने इस पवित्रतम् कर्म को घृणित करने का प्रयास किया कि यज्ञों में पशुबलि दी जाती थी। जबकि वेदों में यज्ञ को 'अध्वर' कहा गया है- अग्ने यं यज्ञमध्वरं - ऋग् 1.1.4. अर्थात् हें ज्ञानस्वरूप परमात्मन् ! आप हिंसारहित यज्ञों में ही व्याप्त होते हैं । निरूक्तकार लिखते हैं- 'अध्वर इति यज्ञनाम ध्वरतिर्हिंसाकर्मा तत्प्रतिषेधः' अध्वर यह यज्ञ का नाम है । जिसका अर्थ हिंसारहित कर्म है। इसी प्रकार यजुर्वेद में भी अध्वर शब्द का प्रयोग मिलता है, जिनमें गाय, घोड़ा, अश्व, भेड़ आदि पशुओं की हिंसा का स्पष्ट निषेध है- पशून् पाहि, द्विपादव चतुष्पात् पाहि' यजु. 14.8.।

अजमेध, गोमेध, पुरूषमेध अश्वमेध इत्यादि शब्दों में मेध का अर्थ हिंसा न होकर मेधृ मेधासंगमनयोर्हिंसायां च इस धातु के अनुसार मेधा या शुद्ध बुद्धि को बढ़ाना थे अर्थ है न केवल हिंसा अर्थ नहीं लेना चाहिए । इस प्रकार पुरूषमेध का अर्थ हो गया- मनुष्यों में परस्पर एकता, मेल मिलाप बढ़ाना । अश्वमेध-अश्व की बलि नहीं अपि तु राष्ट्र के निवासियों के बल,वीर्य, शक्ति को बढ़ाना है। अजमेध का तात्पर्य बकरों से हवन करना नहीं है; अपितु अज एक धान्य विशेष वाचक शब्द है- जिसको यज्ञ में डाला जाता है जैसा कि महाभारत में लिखा है-

अजैर्यज्ञेषु यष्टव्यम् इति वै वैदिकी श्रुतिः । शांतिपर्व अ.337.।

यज्ञ के लिए वेदों में अग्नि के विशेषण अनेक उपलब्ध होते हैं- जिनमें 'हव्यवाहनः' है अर्थात् हवि को सूक्ष्म करके वायुमंडल में फैला देती है ।

यज्ञ से Aldehydes नामक वायु (Gas) पैदा होती है जो रोगों को दूर करने वाली तथा स्वास्थ्यर्धक होती है । पर्यावरण प्रदूषण आज बढ़ता ही जा रहा है । इसका एकमात्र समाधान ऋषियों ने खोज निकाला है, वह है यज्ञ+वेद में कहा है -

सायं सायं ग्रहपतिर्नो अग्नि : ..... प्रातः प्रातः दाता.....।
प्रातः प्रातः अग्निः सायं सायं सौमनसस्य दाता ।
अथर्व. 19/51/4

अर्थात् सायंकाल का किया हुआ हवन प्रातःकाल तक वायुमंडल को शांत सुगन्धित एवं सौम्य रखता है और प्रातः काल का किया हुआ हवन सायंकाल तक वायुमंडल को शांत सुगन्धित एवं सौम्य रखता है।

यज्ञाग्नि के अनेक वैज्ञानिक सिद्धान्त -

(1) अग्नि पदार्थो को विघटित (Decompose) करके सूक्ष्म बनाती है।

(2) ये सूक्ष्म पदार्थ अधिक क्रियाशील या प्रभावी होकर विस्तृत क्षेत्र को प्रभावित करते है।

(3) यज्ञाग्नि में जो भी पदार्थ घी, सामग्री, अन्य औषधियाँ डाली जाती है वे जलकर नष्ट नहीं होते बल्कि भस्म एवं अनेक लाभकारी अदृश्य गैसों के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं । रसायन शास्त्र (Chemistry) का यह सिद्धान्त है - किसी भी रासायनिक प्रतिक्रिया में भाग लेने वाले पदार्थ की मात्रा का योग अपरिवर्तित रहता है-

पुर्नजन्म से - जीव की क्रमिक उन्नति

- महात्मा चैतन्यमुनि

जन्म और मृत्यु की पहेली जनसाधारण को ही नहीं बल्कि बुद्धिजीवियों के लिए भी सदा से ही एक विचारणीय विषय रहा है। कुछ लोगों का मानना है कि व्यक्ति संसार में पैदा होता है और मरने के बाद पूरा किस्सा ही समाप्त हो जाता है मगर कुछ का मानना है कि शरीर के मरने के बाद भी जीवात्मा का अस्तित्व बना रहता है और उसके द्वारा किये गए कर्मो के आधार पर उसका पुर्नजन्म होता है। कठोपनिषद् में एक युवक नचितेता इसी रहस्य को यमाचार्य से जानने की जिज्ञासा करते हुए कहता है : **येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके । एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्ववयाहं वराणामेष वरस्तृतीयः।।** (कठो0उप01-20)

मनुष्य के मर जाने पर जो जिज्ञासा रहती है, कोई कहते है महने पर भी मनुष्य बना रहता है, कोई कहते हैं नही बना रहता। आपसे शिक्षा पाकर मैं इसका समाधान जानना चाहता हूँ । मैंने जो वर मांगने है उनसे तीसरा वर यही है । पहले तो यमाचार्य उस नचिकेता की अनेक प्रकार की परीक्षा लेते हैं मगर बाद में आगे चलकर आत्मा की अमरता का सन्देश देते हुए कहते है -

न जायते म्रियते वा विपचिश्न्नाय कुतश्चिन्न बभूव कश्चित् । अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।। (कठो0उप02-18) यह चेतन जीव न उत्पन्न होता है, न मरता है, न यह किसी कारण से उत्पन्न हुआ है, न पहले कभी हुआ था ।

यह अजन्मा है, नित्य है, निरन्तर है, पुरातन है - शरीर के मरने पर भी यह नहीं मरता - साधारण व्यक्ति के मन में यह बात उतरती नहीं है क्योंकि भले ही वेद, उपनिषद् तथा गीता आदि ग्रन्थों में आत्मा को अजन्मा और अनादि कहा गया है मगर लोगों का कहना है कि वे व्यक्ति का जन्म और मृत्यु होते हुए प्रतिदिन देखते हैं इसलिए जन्म-मृत्यु की पहेली तो फिर भी बनी ही रहती है । वास्तविकता यह है कि आत्मा तो अजर व अमर ही है मगर जन्म और मृत्यु हमारे शरीर की होती है। आत्मा के संयोग से शरीर का जन्म और वियोग से शरीर की मृत्यु होती है इस प्रकार शरीर का ही निर्माण होता है और नाश भी शरीर का ही होता है । हम कह सकते है कि 'जिसमें किसी शरीर के साथ संयुक्त होके जीव कर्म करने में समर्थ होता है, उसे 'जन्म' कहते है' और 'जिस शरीर को प्राप्त होकर जीव क्रिया करता है, उस शरीर और जीव का किसी काल में जो वियोग हो जाना है, उसको 'मरण' कहते हैं ।'

वेदादि सत्य शास्त्रों में पुनर्जन्म की बात को स्वीकारा है अतः इस व्यवस्था को न मानने वाले नास्तिक कहे जाऐंगे । क्योंकि मनु जी ने कहा है - **नास्तिको वेद निन्दकः** अर्थात् वेद को न मानने वाले नास्तिक है। पाणिनी के अनुसार-'जिस विषय में किसी व्यक्ति का विचार उस विषय को स्वीकार करने में है, तो उस विषय की दृष्टि से वह आस्तिक कहा जाऐगा । यदि व्यक्ति का विचार विषय को

शेष भाग अगले पृष्ठ पर ....

(In all chemical and physical changes, the total mass of the system remains constant)

(4) जो गैंसे जितनी हल्की होगी, वह उतनी ही जल्दी वायु में फैल जायेगी । इसी तरह यज्ञ में अशुद्ध वायु के बहिर्गमन एवं शुद्ध वायु के प्रवेश में गैसों/वायु की विसरणशीलता नियम कार्य करता है। घी जलाने से रोग के कीटाणु मर जाते हैं । कैंसर रिसर्च इंस्टीट्यूट, जर्मनी के एक वैज्ञानिक का निजी अनुभव इस प्रकार है - 'After 1 tested Agnihotra myself it really seems that with Agnihotra you have a wonder weapon (against pollution) in your hand' अर्थात- अग्निहोत्र का स्वयं परीक्षण करने के बाद मैंने पाया है कि मानो सचमुच अग्निहोत्र द्वारा आपके हाथ में प्रदूषण के विरूद्ध एक अद्भुत शस्त्र आ जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं अग्निहोत्र एक धार्मिक कर्मकांड ही न होकर रोगनिवारक, पर्यावरण शुद्धिकारक, मानसिक शांति, नैरोग्य स्वास्थ्य, एवं वैज्ञानिक प्रक्रिया है। इसका अधिक से अधिक व्यापक प्रचार होना चाहिए । यह हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है।

सचिव- दिल्ली संस्कृत अकादमी,
दिल्ली सरकार

स्वीकार करने में अस्वीकार करने में है तो वह नास्तिक होगा। 'उनका कथन है – **अस्ति मतिरस्य, आस्तिकः। नास्ति मतिरस्य नास्तिकः। न च मतिसत्तामात्रे प्रत्यय इष्यते, किं तर्हि परलोकोऽस्तीति यस्य मतिरस्ति स आस्तिकः। तद्विपरीतो नास्तिकः** । अर्थात् जो परलोक अर्थात् पुनर्जन्म को स्वीकार करता है, वह आस्तिक तथा जो ऐसा नहीं मानता वह नास्तिक है। इस अर्थ को ऐसे भी कहा जा सकता हैं – जो आत्मा को देह आदि के अतिरिक्त मानकर नित्य सदा विद्यमान रहने वाला स्वीकार करता है वह आस्तिक तथा जो ऐसा नहीं मानता, वह नास्तिक है। अब विचारणीय यह है कि जब आत्मा का देह से अतिरिक्त अलग अस्तित्व है तो देह के छूट जाने के बाद उस आत्मा का क्या होता है? अन्ततः यही बात स्वीकार करनी होगी कि जन्म भी शरीर का होता है और मृत्यु भी शरीर की ही होती है अतः आत्मा अपने कर्मो के अनुसार अनेक गतियों को प्राप्त होता रहता है तथा इसे ही आवागमन या पुनर्जन्म कहा जाता है । यहां यह बात भी मनन करने योग्य है कि पुनर्जन्म आत्मा का नहीं होता बल्कि कर्मानुसार उस आत्मा को अन्य-अन्य शरीर मिलते रहते है.....

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी आत्मा को अमर मानना जरूरी बन जाता है क्योंकि वैज्ञानिकों द्वारा 'ऊर्जा-संरक्षण' सिद्धान्त के आधार पर इस बात को सिद्ध किया जा चुका है कि किसी भी वस्तु का कभी नाश नहीं होता है बल्कि वह अपना स्वरूप बदलती है। कपड़ा भले ही घिस-घिसकर धूल बन जाऐगा मगर पदार्थ उतने का उतना ही रहेगा, वह नष्ट नही होगा । यदि वैज्ञानिक भौतिक जगत् में इस सिद्धान्त को सत्य मानते हैं तो आध्यात्मिक जगत् में भी इस सिद्धान्त को सत्य माना जाना चाहिए और इस सिद्धान्त के अनुसार-आत्मा उत्पन्न नहीं होता और वर्तमान में उसकी सत्ता है तो आगे यह अपना रूप ही बदल सकता है कभी नष्ट नहीं हो सकता। आत्मा का शरीर से अलग अस्तित्व है तथा शरीर के पैदा होने से पूर्व और मरने के बाद भी इसका अस्तित्व बना रहता है। अतः इस बात को स्वीकार करना ही पड़ेगा कि यह कहीं से आता है और कहीं को चला जाता है । इसे ही इसका रूप बदलता कहा जा सकता है और यही पुनर्जन्म है..... पुनर्जन्म के पक्ष में अनेक हेतु दिए जा सकते हैं जैसे आत्मा नित्य है इसलिए उसका नाश नहीं हो सकता। वेद, उपनिषद, मनुस्मृति, दर्शन, गीता आदि ग्रन्थ इस बात का अनुमोदन करते है । कर्मफल-व्यवस्था के आधार पर भी पुनर्जन्म सिद्ध होता है। परमात्मा की न्याय-व्यवस्था और शक्तिमता से भी पुनर्जन्म की पुष्टि होती है। जीव के सामर्थ्य भेद से भी यही बात सिद्ध होती है। यहां हम यह कहना चाहते हैं कि जीव की क्रमिक उन्नति का आधार भी पुनर्जन्म ही है।

यदि हम पुनर्जन्म के सिद्धान्त हो हटा दें तो जीव के क्रमिक विकास की हम कल्पना तक भी नहीं कर सकते है। वास्तव में अच्छे और बुरे कर्मों का फल जीव के अपने ही क्रमिक विकास के लिए दिया जाता है। आवागमन के इस चक्र में ही जीव का विकास होने की संभावना बनी रहती है। यदि केवल एक ही जन्म मान लिया जाए तो परमात्मा भी न्यायकारी नहीं रहेगा क्योंकि हर व्यक्ति को सुधरने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए तथा व्यक्ति को भी एक बार असफल होने पर पुनः सफल होने का प्रयास करना चाहिए। आवागमन में परमात्मा ने यही व्यवस्था कर रखी है। नीच से नीच व्यक्ति को भी निरन्तर सुधरने का अवसर मिलता रहता है । अर्जुन को जब श्री कृष्ण जी योग-ध्यान की बातें बताते हैं तो उसके मन में एक शंका पैदा हो गई जिसे उसने श्रीकृष्ण जी के सामने रखा कि यदि मुझे इस जन्म से पूर्णरूप से योग की सिद्धि न मिली और बीच में ही प्राणान्त हो गया तो मेरे उस किए गए प्रयास का क्या लाभ होगा । श्रीकृष्ण जी ने इसका बहुत ही सार्थक उत्तर देते हुए कहा कि जीवात्मा पर जो अच्छे व बुरे संस्कार पड़ जाते हैं वे कभी भी नष्ट नहीं होते है । व्यक्ति को उसका फल अवश्य मिलता है। वे अर्जुन को आश्वस्त करते है –

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः ।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ।।
अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम् ।
एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम् ।।
तत्र तं बुद्धियंयोगं लभते पौर्वदेहिकम्।
यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरूनन्दन।।
पूर्वाभ्यासेन तेनैव हियते ह्यवशोऽपि सः।
जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते ।। (गी06-41 से 44)

जिस स्थान को पुण्यशाली लोग पाते हैं उसे पाकर, वहां बहुत समय तक रहने के उपरान्त वह योग-भ्रष्ट व्यक्ति पवित्र और श्रीमान् लोगों के घर में जन्म लेता है । अथवा वह बुद्धिमान् योगियों के कुल में ही जन्म लेता है । श्रीमान् लोगों के स्थान में योगियों के कुल में ही जो जन्म लेना है वह तो इस संसार में और भी दुर्लभ है। हे कुरूनन्दन! वहां वह पूर्वजन्म के 'बुद्धि-संयोग' को (संस्कारों को) फिर पा जाता है। और (जहां से पहले छोड़ा था) वहां से फिर संसिद्धि (मोक्ष) पाने के लिए यत्न करता है। वह अपने पिछले जन्म के अभ्यास के द्वारा विवश-सा होकर योग की ओर खिंचता है क्योंकि योग का जिज्ञासु तक भी सकाम विधि-विधान करने वाले से, शब्द-ब्रह्म तक सीमित रह जाने वाले से, ब्रह्म की सिर्फ़ शाब्दिक चर्चा करने वाले से आगे निकल जाता है ।

इस बात को ऐसे समझा जा सकता है कि हम किसी स्थान के लिए प्रस्थान करते हैं मगर कुछ ही दूर जाने के बाद हमें रात हो जाती है और हमें रूककर वहीं विश्राम करना पड़ता है। अब प्रातः काल हमारी यात्रा उस स्थान से आगे आरंभ होगी जहां हमने रात्रि को विश्राम किया था, न कि वहां से जहां से हमने यात्रा आरंभ की थी। वहां तक का मार्ग तो हमने तय कर लिया है । इस प्रकार आवागमन का सिद्धान्त व्यक्ति की क्रमिक उन्नति का आधार है। आवागमन के सिद्धान्त को मानने से व्यक्ति के भीतर एक आशावादी विचारधारा पैदा होती है। यही नहीं उसके भीतर पुण्यकर्म करने की भावना भी परिपक्व होती है । यदि हमारी समूची व्यवस्था से कर्मफल सिद्धान्त को निकाल दिया जाए तो व्यक्ति पापों की ओर अधिक झुकेगा, उसके भीतर स्वेच्छाचारिता के भाव पैदा होंगे और वह प्रत्येक कार्य में मनमानी पर उत्तर आऐगा । किसी भी समाज, राष्ट्र या परिवार में जहां किसी बड़े का भय समाप्त हो जाता है, वहां पर उत्पात ही पैदा होता है । जब किसी के मन में यह विश्वास ही नहीं होगा कि उसे अच्छे कार्यों के लिए पुरस्कृत और बुरे कार्यों के लिए दण्डित किया जाऐगा तो व्यक्ति अच्छे कार्य करेगा ही क्यो ?

महात्मा नारायण स्वामीजी इस सम्बन्ध में लिखते (कर्मरहस्य पृ091) हैं–'यह प्रसिद्ध बात है कि जिसे प्रायः सभी जानते है कि मनुष्य–योनि कर्म करने और फल भोगने दोनों की योनि है, परन्तु अन्य पशु, पक्षी और वृक्षादि की योनियां केवल फल भोगने के लिए हैं। इन भोग वाली योनियों में जाने ही से मनुष्य का सुधार हुआ करता है। मनुष्य को जितनी भी इन्द्रियां मिली हैं, सदुपयोग करने के वास्ते हैं। एक उदाहरण से यह बात साफ हो जाऐगी । मनुष्य को आंखें देते हुए रचियता ने शिक्षा यह दी है कि इनसे सभी मनुष्यों को मित्र की दृष्टि से देखो, किसी के लिए भी देखते हुए, तुम्हारे हृदय में ईर्ष्या द्वेष की भावना न हो । एक मनुष्य इस शिक्षा पर आचरण नहीं करता, सदैव आंखों का दुरूपयोग करता है, समझाना बुझाना उसके लिए सब बेकार है। अब बताओ उसका सुधार किस प्रकार हो ? उसके सुधार का, अब इसके सिवा कोई तरीका बाकी नहीं रहा कि उस व्यक्ति को आंख से काम लेने से रोक दिया जाए । आवागमन से ज्ञात यही होता है, कि वह यदि मनुष्य योनि में पैदा होगा तो अन्धा पैदा होगा यदि और भी कर्म उसके दूषित है तो फिर किसी ऐसी योनि में पैदा होगा जो चक्षुरहित है। करने से करने का और न करने से न करने का अभ्यास हुआ करता है, इसे सभी जानते हैं । इसलिए उस प्राणी की आंख का काम बन्द हो जाने से, आंखों को जो ईर्ष्या द्वेष से देखने का अभ्यास था, वह जाता रहा और वह व्यक्ति सुधरी हुई आंखों के साथ फिर मनुष्य योनि में पैदा हो जाता है ।'

यह तो उन्होंने एक उदाहरण दिया है इसी बात को हम अन्य योनियों आदि के रूप में भी समझ सकते हैं तथा इसी प्रकार जीव धीरे–धीरे क्रमिक विकास करता हुआ मोक्ष प्राप्ति तक पहुंच सकता है। शास्त्रों के अनुसार जीव को संसार में भोग और अपवर्ग के लिए भेजा जाता है। अपने कर्मानुसार ही व्यक्ति भोग करता है और साथ ही मुक्ति के उपाय भी करता है। जीव की सार्थकता इसी में है कि वह सांसारिक भोगों को भोगता हुआ या अपने पूर्वकृत कर्मों को भोगता हुआ भी निरन्तर मुक्ति के उपाय करता रहे..... क्योंकि बार–बार के जन्म–मरण के चक्कर से बचने का केवल यही एक उपाय है। आत्मा को तृप्ति भी वहीं पर मिल सकती है अन्यथा वह तृप्ति की तलाश में भटकता ही रहेगा .....

– महादेव, सुन्दरनगर – 174401, हि0 प्र0

.....***.....

आर्ष कन्या गुरूकुल, दाधिया

प्रवेश सूचना

आर्ष कन्या गुरूकुल, दाधिया, राजस्थान राज्य के अलवर जिले में साबी नदी के किनारे स्थित एक रमणीक संस्था है । यह गुरूकुल दिल्ली से 100 किलोमीटर एवं जयपुर से 150 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है तथा वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र है । अतः आपसे निवेदन है कि आप गुरूकुल में अधिक से अधिक संख्या में कन्याओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धांतों के प्रचार–प्रसार में योगदान दें ।

– सम्पर्क करें –

आचार्या प्रेमलता, आर्ष कन्या गुरूकुल, दाधिया

जिला अलवर, राजस्थान – 301401, फोन नं. : 01495–270503, मो. : 09416747308

"सच तो यही है"

पं. सुरेन्द्र पाल आर्य
गीतकार, वैदिक प्रवक्ता

शूलों से क्या गिला, फूलों में तकरार है ।
रात की बात क्या, सुबहं बिमार है ।।
बेसुरी हो गई बांसुरी श्याम की ।
अब यह महफिल नहीं है मेरे काम की ।।

चिन्तकों की चितायें जलाने लगे ।
असली चेहरे को अपने छिपाने लगे ।।
मन के सूखे हैं लोग,तन के भुखे हैं लोग ।।
कद्र होने लगी है फक्त चाम की ।। अब यह महफिल.....

ख्वाहिशे पाली थीं जो भी मधुमास की ।
चोरनी ले गई, माला विश्वास की ।।
डाल कर झोली में, बैठ कर डोली में ।
वो दुल्हन बन गई किसी ग्राम की ।। अब यह महफिल.....

खोज लेते अगर, होती कहीं पास में ।
नैतिकता तो भटकती है वनवास में ।।
लाज बन्दी हुई, शर्म नंगी हुई ।
वाह वाह होने लगी है बदनाम की ।। अब यह महफिल.....

सपनों के झूलों में हम झूले भी क्यों ।
हम अन्धेरो में उनको झुले भी क्यों ।।
कौन साथी यहाँ, कोन घाती यहाँ ।
किसको इन्तजार है अपने इन्तकाम की ।। अब यह महफिल.....

जिनका दावा था स्वर्ग भू पर लायेंगे हम ।
सारे संसार को श्रेष्ठ बनायेंगे हम ।।
बात जो भी कही, सब हवा हो गई ।
ढपली पीटो चाहे अब किसी नाम ।। अब यह महफिल.....

घर की ईटें ही घर से झगड़ने लगीं ।
देखकर के पड़ोसन थिरकने लगीं ।।
छत रहे या गिरे, कोई जियें या मरें ।
किसको चिन्ता 'सुरेन्द्र'परिणाम की ।। अब यह महफिल.....

४९०,आहुजानगर, नारा रोड, नागपुर-१४

जीवन की आधार शिला : संस्कार

–ओमप्रकाश बजाज

विचार हों या व्यवहार
सब का आधार हैं संस्कार,

चरित्र का निर्माण मनुष्यता की पहचान
संस्कारों का ही है वरदान.

पूर्व जन्मों से प्राप्त होते हैं
परिवार जनों से भी मिलते हैं,

संस्कारों का मोल महत्व हम जानें
संस्कारों का अमिट प्रभाव पहचानें ।

गर्भाधान से देहावसान तक,
जीवन पथ के हर मोड़ पर.

हमारा आचरण हो मर्यादित
सुसंस्कारों की ज्योति से आलोकित.

हम सब यह पावन दायित्व निभाएं
नई पीढ़ी को संस्कारवान बनाएं.

उच्छृंखलता उद्दण्डता से उन्हें बचाएं
समाज की नींव सुदृढ़ बनाएं ।

बी–2, गगन विहार, गुप्तेश्वर,
जबलपुर – 482001 (म.प्र.)

आप पीठ दर्द से परेशान हैं ?

अनिल अग्रवाल

अपनी लंबाकार शरीर रचना की कीमत हमें पीठ दर्द के रूप में चुकानी पड़ती है । जहां केवल 20 प्रतिशत व्यक्ति एलर्जी जनित रोगों से पीड़ित हैं, वहीं 90 प्रतिशत से अधिक व्यक्तियों को अपने जीवन में कभी न कभी पीठ दर्द का सामना करना पड़ता है । वास्तव में हमारा शरीर सीधी कमर और पैरों पर खड़ा होने के लिए बना ही नहीं है । पर इतना अवश्य है कि पैरों पर सीधा खड़े रहने से हाथों को केवल शरीर का भार ढोने की गुलामी से ही छुटकारा नहीं मिलता, अपितु उन्हें उत्कृष्ट कार्यों, जैसे पढ़ने या वाद्ययंत्र बजाने के लिए पूर्ण स्वतंत्रता भी रहती है । जीवन की इन श्रेष्ठ आवश्यकताओं से परे होने के कारण पशुओं को पीठ दर्द का सामना नहीं करना पड़ता है ।

पीठ का मुख रचनात्मक आधार रीढ़ की हड्डी है, जो किसी जहाज के मस्तूल की तरह सीधी खड़ी रहती है और जिससे रस्सियां और पाल (मांसपेशियां और नसें) जुड़े रहते हैं । हां, जहां जहाज में रस्सियां-बल्लियां मस्तूल-पाल को साधे रहती हैं, वहीं मानव शरीर में रीढ़ की हड्डी अन्य सभी अंगों को सहारा देती हैं । इन दोनों में एक बड़ा अंतर और भी है । मस्तूल बिल्कुल सीधा खड़ा होता है जबकि रीढ़ की हड्डी कम से कम चार जगह से मुड़ी हुई होती है ।

रीढ़ की हड्डी के ये चारों मोड़ क्रमशः गर्दन, वक्ष, उदर और कूल्हे के स्थानों पर होते हैं । गर्दन (सरवाइकल) तथा उदर (लम्बर) के हिस्सों में रीढ़ की हड्डी सामने से देखे जाने पर आगे की ओर उभरी दिखाई देती है, जबकि वक्ष (थोरेसिक) और कूल्हे (सेक्रल) भागों में इसका झुकाव पीछे की ओर होता है । कुल मिलाकर वह एक टेढ़े-मेढ़े सर्प की तरह दिखाई देती है । पीठ दर्द के आरंभ और कारणों को समझने में रीढ़ की हड्डी की बनावट का महत्वपूर्ण स्थान है ।

स्लिप डिस्क व्याधि बहुधा 50 वर्ष से अधिक आयु वाले व्यक्तियों को होती है तथा पुरुष व स्त्रियां इससे समान रूप से प्रभावित होते हैं । डिस्क के जल्दी क्षतिग्रस्त होने के कई कारण हैं जिनमें कुपोषण एक है ।

धूम्रपान से डिस्क जल्दी प्रभावित होती है क्योंकि इससे डिस्क का पोषित करने वाली रक्तनलियों में सिकुड़न और रक्त प्रवाह में व्यवधान पैदा हो जाता है । इसी प्रकार स्थूल व्यक्तियों में भी डिस्क की आयु जल्दी बढ़ती है क्योंकि उन्हें शरीर का सामान्य से अधिक बोझ उठाना पड़ता है । यह सही है कि डिस्क की आयु जल्दी बढ़ती उठाना पड़ता है । यह सही है कि डिस्क को काल प्रभाव से अलग नहीं रखा जा सकता परंतु हम अच्छे भोजन, धुम्रपान रहित जीवन तथा मोटापे को नियंत्रित करके इस प्रक्रिया को धीमी अवश्य कर सकते हैं ।

स्लिप डिस्क द्वारा पीठ के निचले हिस्से में दर्द का कारण टूथपेस्ट जैसे पदार्थ का बाहर निकलकर मेरूदंड के समीप की नाड़ियों पर दबाव डालना । एक बार ऐसा होने पर इसका निराकरण संभव नहीं । इसका एक उपचार पीठ की मांसपेशियों को मजबूत करना है ताकि वे शरीर के अधिकाधिक भार को वहन कर सकें, जिससे मेरू श्रृंखला पर कम से कम दबाव पड़े । शल्य क्रिया द्वारा भी फैले हुए डिस्क पदार्थ को पूरी तरह हटाया जा सकता है । सर्वाधिक मात्रा में होने वाले पीठ दर्द में से एक है – कटिवेदना (लम्बैगो) । यह लेटिन शब्द लम्बरस, अर्थात् कटि, से बना है । यह सामान्यतया : लापरवाही से झुकने, वजन उठाने या शरीर को गलत स्थिति में रखने से होता है । ऊंची एड़ी के सेंडिल पहनने वाली महिलाएं इसकी सबसे अधिक शिकार होती हैं । ऊँची एड़ी के संतुलन बिगड़ जाता है और भार उठाने वाला अक्ष बदल जाता है । ऊंची एड़ी के सेंडिल अक्ष रेखा के संतुलन को गड़बड़ा देते हैं, जिससे कटि-क्षेत्र को अधिक भार उठाना पड़ता है । परिणाम होता है – कटिवेदना । गर्भवती महिलाओं को आखिरी महीनों में होने वाले पीठ दर्द का कारण भी यही है । गर्भावस्था में भ्रूण का भार कटि – क्षेत्र को आगे की ओर झुका देता है, जिससे रीढ़ का स्वाभाविक वक्र बदल जाता है तथा कमर पर दबाव पड़ता है ।

पीठ दर्द की दूसरी आम वजह है रीढ़ में अस्थि संधिशोध या ऑस्टियोआर्थाराइटिस (यूनानी शब्द ऑस्टियोन अर्थात् अस्थि) आर्थोस अर्थात् संधि तथा आइटिस अर्थात प्रज्वलन) । इस प्रकार इसमें हड्डियों और जोड़ों में प्रदाह उत्पन्न हो जाता है । यह वृद्ध व्यक्तियों की सामान्य समस्या है तथा मुख्यतया शरीर के अनवरत घिसाव के फलस्वरूप होती है 50 वर्ष से अधिक आयु वालों में यह अधिकतर पायी जाती हैं । एक बार प्रारंभ होने पर इसे रोकना या ठीक करना मुश्किल होता हे । हड्डियों और जोड़ों को भार मुक्त करना ही इसका एकमात्र उपलब्ध उपाय है । इसके लिए शरीर का वजन घटाना आवश्यक है । या फिर, पीठ की मांसपेशियों को नियमित व्यायाम द्वारा पुष्ट करना पड़ता है, ताकि वे आंशिक रूप से शरीर का भार वहन कर सकें ।

पीठ दर्द का एक और प्रमुख कारण है – अस्थिसुषिदता या

ऑस्टियोपोरोसिस । ज्यों-ज्यों आयु बढ़ती जाती है हड्डियों में लवणों की मात्रा कम होती जाती है । इससे हड्डियां कमजोर और भुरभुरी हो जाती हैं । एक्स-रे तथा अस्थि परीक्षण द्वारा इनका पता आसानी से लगाया जा सकता है । इस रोग में हड्डियों पर दबाव का प्रभाव भी पड़ता है । ज्यों ही कशेरूका के सिरों में क्षति होती है हिलने-डुलने पर वह क्षतिग्रस्त कशेरूका साथ वाली कशेरूका से रगड़ खाती है जिससे दर्द और बढ़ जाता है । रात में दर्द होना एक आम बात है । यही नहीं, विश्राम से भी दर्द में कोई विशेष लाभ नहीं होता, और फिर सुबह की जकड़न तो है ही ।

तेज पीठ दर्द से उपचार में मुख्यतया विश्राम तथा दर्द निवारक औषधियां देने का प्रावधान है । बहुत से पीठ दर्द इन साधारण दवाओं से ही ठीक हो जाते हैं । परंतु जब दर्द का कारण टूट-फूट (स्लिप डिस्क या ऑस्टियोआर्थराइटिस) होती है तो बिस्तर का अधिक विश्राम हारिकारक हो जाता है । ऐसे में पीठ की मांसपेशियों को सुदृढ़ करना आवश्यक होता है । इस कार्य के लिए मुख्यतया निम्नलिखित तीन व्यायामों की सिफारिश की जाती है :

व्यायाम -1 :

कमर के बल सीधे लेटिए, टांगें सीधी और बांहे सीधी सटी हुई । एक घुटना उठाकर धीरे-धीरे वक्ष की ओर मोड़िए । इसे दस बार दोहराएं ।

व्यायाम - 2 :

सिर एक मुड़े हुए तौलिए पर रखकर लेटिए-घुटने मुड़े हुए और पैर जमीन पर । धीरे-धीरे अपने नितंबों को ऊपर उठाएं, फिर नीचे करें । इसे दस बार दोहराएं ।

व्यायाम - 3 :

सीधे खड़े हो, बाजू ढीली व सीधी रखें तथा कंधे पीछे की ओर झुके हुए । सिर और बांहों को धीरे-धीरे झुकाते हुए कमर से आगे की ओर झुकें । बिना घुटने मोड़े इस व्यायाम को जारी रखें और पैरों के अंगूठों को छूने का प्रयास करें । इसे दस बार दोहराएं ।

इनके अलावा पीठ दर्द के रोगी को सख्त से सख्त बिस्तर पर सोना चाहिए । तख्तपोश या फर्श पर सोना सबसे हितकर है । गर्भावस्था की अवधि में कुछ बातों को ध्यान रखकर इसे दूर (या कम से कम सीमित) किया जा सकता है । यदि गर्भावस्था से पहले ऊँची एड़ी के जूतों का आप इस्तेमाल करती रही हों तो भी इस अवस्था में कभी न पहनें, बरतन धोने आदि के कामों में आगे झुकना पड़ता है, परंतु इसमें थोड़ा बदलाव करने से लाभ होगा ।

निरंतर व्यायाम से पीठ की मांसपेशियों को मजबूत बनाएं । इसके अलावा सैर करना और तैरना भी अच्छे व्यायाम हैं । टेनिस और बैडमिंटन पीठ की मांसपेशियों को उत्तम स्थिति में रखते हैं । वजन भी कम रखें । जब कभी झुकना भी पड़े तो रीढ़ की जगह घुटनों को झुकाएं । सदैव सीधा खड़ा होने का प्रयत्न करें । पीठ को सहारा देने वाली कुर्सियों पर ही बैठें । खाना सदैव मेज पर ही खायें, आगे झुककर टेलीविजन न देखें । यदि हम ऊपर बताए सामान्य नियमों का पालन करें तो न केवल पीठ दर्द को दूर कर सकते हैं बल्कि उससे बच भी सकते हैं ।

योग संदेश से साभार

.....***.....

भारत के राष्ट्रीय प्रतीक

भारत का राष्ट्रीय ध्वज	-	तिरंगा
भारत का राष्ट्रीय गान	-	जन-गण -मन
भारत का राष्ट्रीय चिन्ह	-	अशोक स्तम्भ
भारत का राष्ट्रीय पंचाग	-	शक संवत्
भारत की राष्ट्रभाषा	-	हिन्दी
भारत की राष्ट्रीय लिपि	-	देवनागरी
भारत का राष्ट्रीय ध्वज गीत	-	हिन्ददेश का प्यारा झंडा
भारत का राष्ट्रीय नारा	-	श्रममेव जयते
भारत का राष्ट्रपिता	-	मोहनदास करमचंद गांधी
भारत का राष्ट्रीय वृक्ष	-	बरगद
भारत की राष्ट्रीय मुद्रा	-	रूपया
भारत की राष्ट्रीय नदी	-	गंगा
भारत का राष्ट्रीय पक्षी	-	मोर
भारत का राष्ट्रीय पशु	-	बाघ
भारत का राष्ट्रीय फूल	-	कमल
भारत का राष्ट्रीय फल	-	आम
भारत की राष्ट्रीय योजना	-	पंचवर्षीय योजना
भारत का राष्ट्रीय खेल	-	हॉकी
भारत की राष्ट्रीय मिठाई	-	जलेबी
भारत के राष्ट्रीय पर्व	-	26 जनवरी (गणतंत्र दिवस)
		15 अगस्त (स्वतंत्रता दिवस)
		2 अक्टूबर (गांधी जयन्ती)

(मासिक कान्ति से साभार)

आर्य जगत के समाचार

आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह

पिछले कई वर्षों के अनुसार इस वर्ष होली मंगल मिलन समारोह रविवार दिनांक 24 मार्च 2013 को रघुमल आर्य कन्या स्कूल राजा बाजार कनाट प्लेस में आयोजित हुआ । आरम्भ में नवसस्थेष्टी यज्ञ हुआ । फूलों की होली के माध्यम से पर्व को सार्थकता प्रदान की ।

प्रो. कैलाशनाथ सिंह नही रहे

सार्वदेशिक सभा के यशस्वी मंत्री प्रो. कैलाश नाथ सिंह का निधन 9 मार्च 2013 को वाराणसी में हुआ । 30 जुलाई 1939 को जन्मे श्री सिंह महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त थे । आर्य समाज के प्रति वे आजीवन समर्पित रहे । विधायक, सांसद तथा शिक्षा मंत्री के पदों को सुशोभित किया । वे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वर्षों तक प्रधान रहे । सार्वदेशिक आ.प्र.सभा के मंत्री पद पर कुशलता पूर्व कार्य कर रहे थे । 13 मार्च को वाराणसी में आयोजित विशाल शोक सभा में श्रद्धांजलियां आयोजित की गई । इसमें आर्य जगत के नेताओं तथा राजनेताओं ने उनके योगदान की चर्चा की । प्रायः सभी ने उनके योगदान का उल्लेख किया । कहना न होगा कि उनके निधन से आर्य समाज की अपूरणीय क्षति हुई ।

आर्य समाज स्थापना दिवस का आयोजन –

आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में 140 वां आर्य समाज स्थापना दिवस फिक्की सभागार में आयोजित हुआ । मुख्य वक्ता डॉ. महेश विद्यालंकार थे । स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने भी अपने विचार प्रकट किए । विभिन्न शालाओं के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए । दिल्ली की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं से सम्बंधित हजारों की संख्या में व्यक्ति उपस्थित थे ।

मध्य भारतीय आ.प्र. सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

निर्वाचन अधिकारी श्री सुदामा जी मुनि की अध्यक्षता में सभा के चुनाव सर्वसम्मति निम्नानुसार घोषित हुए :-

प्रधान – श्री इन्द्र प्रकाश गांधी

उपप्रधान – सर्वश्री भगवान दास अग्रवाल, परमाल सिंह कुशवाहा, मानसिंह यादव, लक्ष्मीनारायण पाटीदार, रामपाल सोनी, गोविंद लाल आर्य ।

महामंत्री – श्री प्रकाश आर्य ।

कोषाध्यक्ष – श्री अतुल वर्मा ।

उपमंत्री – सर्वश्री दक्ष देव गौड़, कैलाश नारायण, कमलेश याज्ञिक, श्रीधर शर्मा, डॉ. सत्यप्रकाश, दरवारा सिंह ।

कोषाध्यक्ष – श्री धर्मेंद्र कौशल ।

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश तथा विदर्भ तथा 'आर्य सेवक' परिवार की ओर से हार्दिक –हार्दिक बधाईयाँ ।

आर्य गुरूकुल महाविद्यालय आबू पर्वत में प्रवेश–

आर्ष गुरूकुल महाविद्यालय आबू पर्वत के तेईसवें वार्षिकोत्सव एवं वेदारम्भ संस्कार का दिनांक – 25,26,27 मई 2013 को आयोजन किया गया है। इस अवसर पर नये विद्यार्थियों को गुरूकुल में प्रवेश दिया जायेगा । पॉच कक्षा पास लगभग 10–11 वर्ष की आयु के विद्यार्थी गुरूकुल में प्रवेश पा सकेगें, पंचम कक्षा पास विद्यार्थियों की लिखित परीक्षा ली जायेगी, परीक्षा में पास होने वाले विद्यार्थी को ही प्रवेश दिया जायेगा । इसलिये जो सज्जन अपने पुत्रों को चरित्रवान् एवं सुयोग्य विद्वान बनाना चाहते है वे गुरूकुल में प्रवेश दिलाने हेतु अपने पुत्रों को साथ लेकर इस समारोह में पधारें । पांचवी कक्षा का प्रमाण पत्र साथ लावें ।

अध्यक्ष स्वामी धर्मानन्द स्वामी

1. निः शुल्क आवास व शिक्षा व्यवस्था ।
2. आर्ष पाठविधि से पढ़ाई जाने वाली शास्त्री आचार्य तक की शिक्षा। गुरूकुल झज्जर से सम्बन्धित शास्त्री एवं आचार्य उपाधि महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा) द्वारा प्रदान की जाती है।

3. कम्प्यूटर व्यवस्था – गुरूकुल में छात्रों को कम्प्युटर की शिक्षा भी दी जाती हैं ।

विशेष जानकारी के लिए 10 रू. डाक टिकट भेजकर गुरूकुल की नियमावली मंगवायें ।

माता राजो भल्ला कन्या छात्रावास एवं माता परमेश्वरी देवी कन्या विद्यालय सुनाबेड़ा में आर्यवीर दल का शिविर सोत्साह सम्पन्न –

गत 3 से 7 अप्रेल तक सुनाबेड़ा अभ्यारण्य के कन्या छात्रावास के प्रांगण में पंच दिवसीय आर्यवीर दल का शिविर गुरूकुल आमसेना के वरिष्ठ अध्यापक आचार्य महेन्द्र कुमार जी के मार्ग दर्शन में सम्पन्न हुआ । इस शिविर में उस क्षेत्र के 40 से अधिक आदिवासी युवकों ने श्रद्धापूर्वक भाग लेकर प्रशिक्षण प्राप्त किया । शिविर के अन्तिम दिन आचार्य कोमल कुमार ने यज्ञ करवाकर सबको यज्ञोपवीत प्रदान किया तथा मद्य, मांस आदि दुर्व्यसनों से दूर रहने का संकल्प करवाया । अन्तिम दिन कन्या आश्रम का वार्षिक महोत्सव पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी की उपस्थिति में धूमधाम से मनाया गया । इस अवसर पर उस क्षेत्र की श्रद्धालु मातायें एवं पुरूष उपस्थित थे। सभी ने श्रद्धापूर्वक यज्ञ में आहूति दी तथा पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी की प्रेरणा पर उस क्षेत्र में व्याप्त छुआछूत आदि दोषों को छोड़ने का संकल्प लिया। ऋषि लंगर में लगभग 600 से अधिक स्त्री–पुरूषों ने श्रद्धापूर्वक भोजन ग्रहण किया । ऐसे आयोजनों से वहां शनैः–शनैः व्यापक सुधार हो रहा है। छुआछूत मिट रही है । अब वहां के लोग दुर्व्यसन छोड़कर परिश्रम भी करने लगे हैं । इस समय उस क्षेत्र की 70 से अधिक कन्यायें पूर्णतया निःशुल्क शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। इसी प्रकार गुरूकल की ओर से संचालित हाई स्कूल में भी 7 अध्यापकों के मार्गदर्शन मे 80 से अधिक बालक–बालिकायें शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। इस विद्यालय में अधिकतर छात्र मैट्रिक परीक्षा में भी अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होते हैं । यह हाईस्कूल भी पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी की प्रत्यक्ष देख–रेख में गुरूकुल आश्रम आमसेना के सहयोग से चल रहा है।

टंकारा में ऋषिबोधोत्सव हर्षोल्लास सहित सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 4 मार्च से 11 मार्च, 2013 तक ऋषिबोधोत्सव सम्पन्न हुआ । यजुर्वेद पारायण यज्ञ के आचार्य श्री रामदेव जी के ब्रह्मत्व में निरन्तर 7 दिनों तक चलता रहा । भारत के लगभग सभी प्रांतों से पधारे ऋषिभक्त इसमें सम्मिलित हुये । यज्ञ में प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सतपाल जी पथिक के मधुर भजन यज्ञवेदी पर ही होते थे ।

मुख्य कार्यक्रम 9 एवं 10 मार्च को था प्रातः 6 बजे से प्रभातफेरी जो कि टंकारा ग्राम एवं टंकारा परिसर में होती हुई गुजरी प्रातः प्रतिदिन प्रातः 6:30 बजे से 7:45 बजे तक प्राकृतिक योग, प्राकृतिक एवं आयुर्वेद चिकित्सा का कार्यक्रम निरन्तर तीन दिन तक चलता रहा।

उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के ब्रह्मचारियों का कार्यक्रम जिसकी अध्यक्षता श्री एस. के. शर्मा, मंत्री प्रादेशिक सभा, एवं निर्देशक डी.ए. वी. कालेज पब्लिकेशन विभाग ने की । इस सत्र में विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न प्रकार से वेद पाठों का उच्चारण किया गया इसी के साथ भजन, कव्वाली एवं चन्द्रशेखर आजाद के जीवन चरित्र पर आधारित एक नाटक को प्रस्तुत किया गया।

यज्ञवेदी पर कुछ विशेष परिवारों को सम्मानित किया गया जिसमें नीलम–अरूण थापर एवं सरला–रमेश ठक्कर को सम्मानित किया गया । इसी अवसर पर श्रीमती अरूणा सतीजा पुत्र श्री राजेश सतीजा को विशेष रूप से सम्मानित किया गया । तदुपरान्त दिल्ली से आर्य समाज के युवा विद्वान डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार पर यज्ञ का प्रवचन इस दिन का मुख्य आकर्षण था।

मुख्य श्रद्धांजलि सभा श्री मिठाईलाल सिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई और इसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्री योगेश मुंजाल जी उपस्थित थे । इस अवसर पर प्रतिवर्ष की भांति विशेष सम्मान के रूप में श्रीमती किरण अमित पटेल (भुज) को टंकारा श्री, श्री अमृतलाल मेघजी भाई बुद्धदेव (टंकारा) एवं श्री विद्यामित्र ठुकराल (दिल्ली) को टंकारारत्न और श्री अशोक दड़गा को टंकारा मित्र की उपाधि से अलंकृत किया गया । इसी अवसर पर स्वामी संकल्पानन्द स्मृति सम्मान स्वामी श्रद्धानन्द जी (महाराष्ट्र) को दिया गया । इस अवसर पर श्री एस के शर्मा जी ने श्री पूनम सूरी जी का संदेश पढ़कर सुनाया । (चित्र पृष्ट 24 पर देखें)

.....***.....

सभा क्षेत्र के समाचार एवं सूचनाएँ

जबलपुर में आर्य समाज का स्थापना दिवस-

जबलपुर नगर की समस्त आर्य संस्थाओं की ओर से आर्य समाज गंजीपुरा के तत्वावधान में आर्य समाज का स्थापना दिवस, दयानन्द भवन नेपियर टाऊन में मनाया गया । सभा की अध्यक्षता श्री अमरनाथ शर्मा, उपाध्यक्ष आर्य विद्या सभा ने की। मुख्य अतिथि डॉ. श्रीमति ईश्वरमुखी शिक्षाविद्,तथा सचिव आर्य विधा सभा रहीं । सभा का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ जिसमें नव वर्ष प्रतिपदा एवं आर्य समाज स्थापना दिवस की विशेष आहूतियाँ प्रदान की गई । सभा में श्री धीरेन्द्र पान्डे आचार्य दयानन्द भवन आर्य समाज, श्री विकास देव शास्त्री, आचार्य गोरखपुर आर्य समाज, डॉ आदर्श शास्त्री आदि ने आर्य समाज स्थापना दिवस पर अपने उद्गार प्रगट किए । श्री राकेश चौरसिया तथा श्रीमती विमला सैनी ने मधुर भजन प्रस्तुत किए । बालकों द्वारा भी प्रस्तुतियाँ दी गई । डॉ. ईश्वर मुखी द्वारा अपने प्रवचन में आर्य समाज की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हुए समस्त आर्य कार्यकर्ताओं को आर्य समाज के हित में रचनात्मक कार्य करने के लिए प्रेरित किया ।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री अमरनाथ शर्मा जी द्वारा समस्त आर्यो को प्रेरित किया कि वे आर्य समाज को सक्रिय बनाने के लिए प्रयत्नशील रहें । आभार प्रदर्शन आर्य समाज गंजीपुरा के मंत्री राजाराम आर्य द्वारा किया गया । सभा का संचालन श्री जगदीश मित्र कुमार अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य सभा ने किया ।

आयोजन का चित्र हम आवरण पृष्ठ पर दे रहे हैं ।

परतवाडा में आर्य समाज स्थापना दिवस एवं चैत्रशुक्ल प्रतिपदा नव संवत्सर पर्व मनाया गया

आर्य समाज परसवाडा सिविल लाईन के आर्य समाज के कार्यकर्ता एवं पदाधिकारियों द्वारा दि.11.4.2013 गुरूवार को सुबह 10 बजे आर्य समाज स्थापना प्रतिपदा नव संवत्सर पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया ।

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश एवं विदर्भ नागपूर के प्रधान पंडित श्री सत्यवीर शास्त्री के पौराहित्य में वैदिक मंत्रों द्वारा यज्ञ संपन्न हुआ। श्री शास्त्री जी ने आर्य समाज स्थापना दिवस पर महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा किये गये कार्यो की जानकारी दी और नवसंवत्सर पर्व क्या है और क्यों मनाया जाता है इसकी सविस्तार जानकारी दी । इस कार्यक्रम में आर्य समाज के प्रधान–मदन जी भुर्णे, मंत्री– तेजव्रत गोबारे कोषाध्यक्ष – जीवन गोंडवले, सहित सदस्य उपस्थित थे।

आचार्य अंशुदेव जी का भव्य स्वागत –

आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ के युवा प्रधान आचार्य अंशुदेव जी और अनुभवी ज्ञानी, श्री दीनानाथ जी वर्मा मंत्री, श्री सत्यवीर शास्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ का शुभागमन आर्य समाज हंसापुरी में हुआ।

सायंकाल आर्यसमाज के सत्संग हॉल में आर्य समाज हंसापुरी की ओर से दोनों महानुभावों का स्वागत–शाल श्रीफल एवं पुष्पमाला द्वारा किया गया । इस अवसर पर आर्य प्र. सभा के प्रधान आर्य समाज हंसापुरी के उप प्रधान एवं आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्राचार्य श्री अनिल शर्मा, मंत्री आर्य समाज हंसापुरी व कार्यालय मंत्री (सभा) श्री अशोक जी यादव, श्री संतोष जी गुप्ता, युवा पुरोहित पं. कृष्णकुमार जी शास्त्री, श्री वाडीभस्मे, सभा प्रधान सत्यवीर शास्त्री आदि उपस्थित थे।

आभार प्रदर्शनोपरान्त दोनों सभाओं के पदाधिकारियों के मध्य औपचारिक चर्चा संपन्न हुई। जिस में निम्न चार पहलुओं पर दोनों सभाओं के पदाधिकारिओं की सर्वसम्मति हुई ।

1) दोनों सभाओं चल रहे विभिन्न अभियोगों में परस्पर सहयोग करेंगे ।
2) जिन कोर्ट केसेस में दोनों सभाओं को पार्टी बनाया गया है, वहाँ दोनों ने एक साथ लड़ना चाहिए ।
3) आपसी विवादों को शांति के साथ चर्चा द्वारा निपटारा करना चाहिए और आर्य जनता में उत्तम संदेश जाना चाहिए ।

4) दोनों सभाओं को सक्षम बनाने का प्रयास दोनों सभाओं के पदाधिकारी करें जिससे वैदिक धर्म का प्रचार और प्रसार अधिक से अधिक मात्रा में संपन्न हो । शांतिपाठ के साथ चर्चा समाप्त हुई । पं. सत्यवीर शास्त्री (इस आयोजन की फोटो हम आवरण पृष्ठ 24 पर दे रहे हैं ।)

प्रो. कैलाशनाथ सिंह को हंसापुरी के सदस्यों द्वारा श्रद्धांजलि

आर्य समाज हंसापुरी में प्रो. कैलाश नाथ सिंह जी के देहावसान का समाचार मिलते ही शोक की लहर दौड़ गई । 17 मार्च के साप्ताहिक सत्संग में प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ के मंत्री प्रो. अनिल शर्मा, पुस्तकाध्यक्ष संतोष गुप्ता, सदर आर्य समाज में मंत्री रंगलाल प्रजापति की प्रमुख उपस्थिति में पं. कृष्ण कुमार शास्त्री जी द्वारा शांति यज्ञ करवाया गया । इस अवसर पर उपस्थित सदस्यों ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये । सभा के कार्यालय मंत्री श्री अशोक यादव ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि प्रो. कैलाशनाथ सिंह बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे, उनके निधन से आर्य जगत को अपूर्णीय क्षति हुई है । मेरी उनकी मुलाकात सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में अंतरंग सभा की एक बैठक के दौरान हुई थी, और जैसा कि स्वाभाविक है कि 'यादव बन्धु' होने के नाते उन्होंने मुझ से अपना थोड़ा सा स्नेह देते हुये कहा था कि आज हमारे समाज को हमारी युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कार देने की परम आवश्यकता है, इसलिये हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम समाज के ज्यादा से ज्यादा लोगों को आर्य समाज से जोड़ते हुये आर्य समाज में हो रहे बिखराव को रोक एकता के साथ महर्षि दयानन्द के उद्देश्यों को पूरा करने के लिये गति दें । आप भी अपनी आर्य समाजों को एकजुट कर निस्वार्थ भाव से समाज के कार्यों को गति प्रदान करें । ऐसे व्यक्तित्व के धनी का हमारे बीच से चले जाना, आर्य समाज की एकता कड़ी का टूट जाना जैसा है । अंत में समस्त सदस्यों व पदाधिकारियों द्वारा 2 मिनिट का मौन रख मौन श्रद्धांजलि अर्पित कि गई ।

आर्य समाज अंजनगाँव

आर्य समाज अंजनगाँव के प्रधान अंबादासजी पाटिल का स्वर्गवास हुआ । अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक विधि से संपन्न किया गया । शांति यज्ञ का कार्यक्रम -सभा प्रधान पं. सत्यवीर शास्त्री के अध्यक्षता में संपन्न हुआ । इसमें आर्य समाज परतवाड़ा, सुर्जी निमखेड़ बाजार, टाकरखेड़ा, मोरे, अमरावती, भंडारण आर्य समाज के पदाधिकारी उपस्थित थे । श्री सोनाजी सुलताने, श्री शंकर भास्कर, श्री रामभाऊ लांजे, श्री रमेश शेलके आदि ने शोक श्रद्धांजली अर्पित की ।

"श्री रमेश श्री रामजी शेलके" प्रधान निर्वाचित

आर्य समाज अंजनगाँव के प्रधान श्री अंबादासजी पाटिल का स्वर्गवास होने पर उनके रिक्त स्थान पर सर्व सम्मति से भी 'रमेश' जी शेलके को प्रधान निर्वाचित किया गया ।

श्री गोपालराव सहारे के भवन का उद्घाटन

परतवाड़ा :- आर्य समाज परतवाड़ा के पूर्व प्रधान श्री गोपालराव पूंजाजी सहारे नये भवन का वास्तु संस्कार पं. सत्यवीर शास्त्री प्रधान सभा के बह्मत्व में संपन्न हुआ । इसमें श्री मदनराव जागुर्णे प्रधान, श्री तेजव्रत गोवारे मंत्री आदि धनवान एवं प्रतिष्ठित नागरिक उपस्थित थे । कार्यक्रम के अंत में सबको बढ़िया नाश्ता करवाया गया ।

आर्य समाज सदर नागपुर में हवन के साथ होली मिलन का कार्यक्रम सम्पन्न

होली के उपलक्ष्य में आर्य समाज सदर में हवन सत्संग, भजन कार्यक्रम में पं. देवदत्त शास्त्री ने होली के महत्व को समझाया । चंदन तथा फूलों की होली का कार्यक्रम घेयर के प्रसाद के साथ सम्पन्न किया गया ।

कार्यक्रम में प्रमुख उपस्थित आर्य समाज के सर्वश्री मंत्री आर.बी. प्रजापति, श्रीमती भारती पाठक, रजनी चौरसिया, किरण यादव, जयम त्रिवेदी, श्री महेश शाहू, घनश्याम दुबे, बुर्रेवार आदि गणमान्य सदस्यों ने उत्साह के साथ होली मिलन के कार्यक्रम में सहभाग लिया ।

प्रति, _____

_____

नागपुर में छत्तीसगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों का स्वागत (समाचार पृष्ठ 22 पर देखें)

मंचासीन श्री एस.के. शर्मा (मन्त्री प्रादेशिक सभा), श्री वेद प्रकाश गर्ग जी प्रधान आर्य समाज चैम्बुर, श्रीमती शिवराजवती आर्य (उप-प्रधान टंकारा ट्रस्ट, श्री मिठाई लाल सिंह जी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई), श्री योगेश मुंजाल जी (ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट), श्री हंसमुख परमार (ट्रस्टी), श्री रविन्द्र कुमार, श्री महेश चोपड़ा जी, श्री आर. के सेठी (अधिकारी, डी.ए.वी.), स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती (यमुना नगर), श्री रामनाथ सहगल (मन्त्री टंकारा ट्रस्ट)

(समाचार पृष्ठ 21 पर देखें)

प्रकाशक : प्रा. अनिल शर्मा, प्रबंधक संपादक एवं मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा,
मध्यप्रदेश व विदर्भ द्वारा उक्त सभा के लिए प्रकाशित एवं प्रसारित
मुद्रक : आर्य प्रिंटिंग प्रेस, गोरखपुर, जबलपुर, फोन : 0761-4035487